हिन्दी शिक्षण में आधुनिक तकनीकी एवं चुनौतियाँ



राजीव अग्रवाल

पंकज कुमार

जैनेन्द्र सिंह

हिन्दी शिक्षण की आधुनिक तकनीकी एवं चुनौतियाँ

राजीव अग्रवाल
डीन- शिक्षा संकाय
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

पंकज कुमार
एम०ए०(एजुकेशन), एम०एड०

जैनेन्द्र सिंह
बी०एस०सी०, बी०एड०

हिन्दी शिक्षण की आधुनिक तकनीकी एवं चुनौतियाँ

राजीव अग्रवाल
पंकज कुमार
जैनेन्द्र सिंह

E-book संस्करण:2021
मूल्य-50.00

ISBN: 978-93-5473-080-1

प्रकाशक:
जैनेन्द्र सिंह
पता-कैलाशपुरी, थाना-कोतवाली नगर, जिला-बाँदा, उ०प्र०(210001)
मो०न०- 7570870570
ई०मेल- jainendrasingh606@gmail.com

प्राक्कथन

शिक्षा मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने का महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा प्रक्रिया के द्वारा प्राप्त ज्ञान एवं कौशल के द्वारा व्यक्ति अपने जीवन की विभिन्न समस्याओं का समाधान करता है, अपने सामाजिक तथा भौतिक पर्यावरण को उन्नत बनाता है तथा अपने अधिकारों के प्रति सजग रहते हुए अपने कर्तव्यों का पालन करता है। शिक्षा मनुष्य के वर्तमान एवं भविष्य को सजाती एवं संवारती है। प्रस्तुत पुस्तक **"हिन्दी भाषा की आधुनिक तकनीकी एवं चुनौतियों के अध्ययन"** पर केंद्रित है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक **"हिन्दी भाषा की आधुनिक तकनीकी एवं चुनौतियाँ" है ।** प्रस्तुत पुस्तक को सात अध्यायों में विभाजित किया गया है।

अध्याय प्रथम— प्रस्तुत पुस्तक के इस अध्याय में समस्या का प्रादुर्भाव, अध्ययन के औचित्य, समस्या कथन, प्रयुक्त पदों का परिभाषीकरण, अध्ययन के उद्देश्य, अध्ययन के सीमांकन, शोध विधि तथा अध्ययन के महत्व का वर्णन किया गया है।

अध्याय द्वितीय— इस अध्याय में सम्बन्धित साहित्य का अर्थ, सर्वेक्षण के कार्य, संबंधित साहित्य का महत्व, भारत में हुए शोध तथा निष्कर्ष का वर्णन किया गया है।

अध्याय तृतीय— इस अध्याय में हिन्दी की व्युत्पत्ति, भाषा का अर्थ, हिन्दी भाषा का विकास, मध्यकाल में हिन्दी तथा आधुनिक काल में हिन्दी के विषय में वर्णन किया गया है।

अध्याय चतुर्थ— इस अध्याय में प्रस्तावना, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, दिल्ली केन्द्र, हैदराबाद केन्द्र, मैसूर केन्द्र, दीमापुर केन्द्र, भुवनेश्वर केन्द्र, अहमदाबाद केन्द्र, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, अखिल भारतीय हिन्दी संस्थान दिल्ली, महात्मा गांधी हिन्दी विश्वविद्यालय,वर्धा, अटल बिहारी हिन्दी विश्वविद्यालय,भोपाल के विषय में वर्णन किया गया है।

अध्याय पंचम— इस अध्याय में हिन्दी के ब्लॉग, वेबसाइट, सर्च इंजन, रफ्तार, पुस्तक, ई-पुस्तक, सॉफ्टवेयर, पत्र-पत्रिका, न्यूज़ चैनल, समाचार-पत्र, वर्तनी जाँचक, शब्दकोश, अनुवादक तथा सोशल मीडिया के विषय में विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

अध्याय षष्ट— इस अध्याय में हिन्दी की पाठ्य-पुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन तथा उनके समावेशन हेतु सुझावों का वर्णन किया गया है।

अध्याय सप्तम— इस अध्याय में प्रस्तावना, निष्कर्ष तथा अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता का वर्णन किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित है। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भंडार में वृद्धि होती है तथा नवीन अनुसंधानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं जब तक वह जनमानस को सुलभ ना हो, प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में एक सार्थक कदम है।

इस पुस्तक के सृजन में संदर्भ सूची में वर्णित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है, हम सभी के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित करते हैं।

इस पुस्तक में अनेक त्रुटियां होना स्वाभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वानगण त्रुटियां अवगत कराने का कष्ट करें तो हम अत्यंत आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगें।

दिनांक-26/06/2021

राजीव अग्रवाल

पंकज कुमार

जैनेन्द्र सिंह

अनुक्रमणिका

तीसरा अध्याय : हिन्दी शिक्षण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

चतुर् थ अध् याय: हिंदी भाषा के संस् थान

पंचम अध्याय : हिन्दी शिक्षण के आधुनिक आयाम

षष्ठ अध्याय : हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन एवं समावेशन

सप्तम् अध्याय : निष्कर्ष, उपादेयता एवं सुझाव

प्रथम अध्याय

सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि

1.1 प्रस्तावना –

शिक्षा मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा प्रक्रिया के दौरान प्राप्त ज्ञान एवं कौशल के द्वारा व्यक्ति अपने जीवन की विभिन्न समस्याओं का समाधान करता है। अपने सामाजिक तथा भौतिक पर्यावरण को उन्नत बनाता है तथा अपने अधिकारों के प्रति सजग रहते हुए अपने कर्तव्यों का पालन करता है। शिक्षा मनुष्य के वर्तमान एवं भविष्य को सजाती एवं संवारती है।

सम्पूर्ण जीवमण्डल में केवल मनुष्य को ही भाषा का अमूल्य वरदान ईश्वर से मिला है। भाषा के कारण ही मनुष्य है और सभी जीवधारियों में सर्वोत्तम स्थान है परन्तु भाषा के अविष्कार के लिए पहले से ही मनुष्य को होना आवश्यक है। भाषा एक मानवीय कृति है। भाषा की उत्पत्ति वैज्ञानिकों के लिए एक रहस्य है। डर्विन जैसे विचारकों का मत है कि भाषा ईश्वरीय वरदान नहीं है अपितु, ध्वनियों, शब्दों बोली से विकसित एवं परिष्कृत होकर आज इस अवस्था तक पहुॅची है भाषा के विकास और मानव के विकास का सीधा सम्बन्ध है भाषा को यदि प्रकृति की देन मानते है। तो यह प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना है। भाषा भावों एवं विचारों की जननी तथा अभिव्यक्ति का साधन एवं माध्यम है। भाषा के कारण ही मनुष्य इतना उन्नत प्राणी बन सका है। बुद्धि तथा विचार चिन्तन शक्ति के कारण ही मनुष्य भाषा का अधिकारी बन सका है। शरीर के अंगो की सहायता से विविध प्रकार की ध्वनियों का उच्चारण से उत्पन्न करता है जिससे अक्षर तथा शब्दों से प्रकट करते हैं। आज भी मनुष्य की अनुभूतियों को शाब्दिक भाषा से अभिव्यक्ति के लिए मुख्य भाषा का ही प्रयोग किया जाता है यह अक्सर व्यक्तियों को कहते सुना है इसकी अभिव्यक्ति अश्रुधारा से व्यक्ति कर पाता है।

भाषा की परिभाषा –

"भाषा वह साधन तथा माध्यम है जिसके द्वारा अपने विचार, भाव तथा इच्छाओं की अभिव्यक्ति करता है।"

राष्ट्र के पुनर्निर्माण के कार्य में भाषा शिक्षा का विशेष महत्व है। शिक्षा एक कला है और कला जीवन का एक अंग आकर्षणहीन कला में जीवन का सदैव अभाव ही रहता है। शिक्षण शनैः–शनैः कलाविहिन होकर यान्त्रिक बनता जा रहा है यान्त्रिक प्रक्रिया में नियमितता आवश्यक होती है किन्तु शिक्षक की आन्तरिक सूझ को कोई स्थान नही है इसलिये शिक्षण में नीरसता आती जा रही है। उददेश्यहीन क्रिया व्यर्थ है पृथ्वी पर चीज अद्देश्यपूर्ण है बिना उदद्श्य के प्रत्येक क्रिया अर्थहीन है बिना उदद्श्य के मनुष्य का जीवन पशु की तरह हो जाता है।

अतः मनुष्य विभिन्न उदद्श्यो तथा लक्ष्यो से निर्धारित करता है और उस उदद्श्य को प्राप्त करने के लिए निस्तर प्रयत्नशील रहकर प्रगति की ओर अग्रसर रहता है।

हर सुसंस्कृत शिक्षित परिवार की नींव भाषा से होती है भाषा परिवार का आधार होती है और भाषा से ही हिन्दी का प्रादुर्भाव होता है। (चतुर्वेदी, शिखा, पृष्ठ सं.–1,2,3)

शिक्षा का उच्चतम रूप वही हैं जो केवल ज्ञान प्रदान करने तक ही सीमित न रहे अपितु सभी वस्तुओ के साथ हमारा सामंजस्य भी स्थापित करें। हिन्दी भाषा पाठ्यक्रम के अत्यन्त महत्वपूर्ण विषयों में से एक विषय है। हिन्दी का क्षेत्र इतना विशाल एवं व्यापक है जिसमें सभी मानव क्रियाकलापों तथा अनेक संस्कारो का समावेश है। हम मानव जीवन के गर्भाधान संस्कार से लेकर अन्तिम संस्कार तक किसी भी क्षेत्र में प्रविष्ट हों, हिन्दी का ज्ञान अति उपयोगी सिद्ध होता है।

हमारे देश में विविध क्षेत्रों में हजारों वर्षो से साथ–साथ रहने वाले मानव समुदायों ने अपने अनुभव के आधार पर पर्यावरण एवं संसाधन प्रबंधन की विधियों एवं प्रौद्योगिकी का विकास किया सामाजिक सद्भाव एवं पारस्परिक सहयोग के सिद्धान्त निर्धारित किये और

एकता के साथ विविधता का समन्वय स्थापित करने वाली संस्कृति का विकास अपनी भाषा के द्वारा किया।

हिन्दी विषय अत्यन्त व्यापक है एक ओर हिन्दी का सम्बन्ध चिकित्सा, संस्कार, रीतिरिवाज, संस्कृति और सभ्यता से ही तो दूसरी ओर विज्ञान से है । हिन्दी मनुष्य के आध्यात्म जगत भौतिक जगत तथा प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण का अध्ययन करते है। हिन्दी के ज्ञान के बिना हमारी शिक्षा नितांत अधूरी हैं इसके ज्ञान के बिना वर्तमान संसार के विषय समस्याओं को समझना अत्यंत दुरूह हैं। अतः समुचित प्रगति के लिए इसको समझना आवश्यक है।

भारतीय समाज में संस्कृत, प्राकृत का महत्व प्राचीन समय से है और उन्हीं धाराओं से निकली परिपोषित हिन्दी जिसने सभी भाषाओं के शब्दो को अपने आप से समाहित कर लिया है आज भी सर्वत्र महत्वपूर्ण और प्रभावशाली दिख रही है।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है –

" मेरा विश्वास है कि बहुत जल्दी ही वह स्थित आने वाली है कि हिन्दी की उपेक्षा करने वाले स्वयं उपेक्षित ही जायेंगे और इस देश की भाषायें और उन्हें सम्पर्क बनाये रखने वाली प्रमुख भाषा हिन्दी अपना अधिकार प्राप्त करेगी। अन्तरराष्ट्रीय मर्यादा उसे अभी ही प्राप्त हो गयी है, विश्व मंच पर राजनीतिक मर्यादा भी बहुत जल्दी ही प्राप्त होगी उसको रोका नही जा सकता।"

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में हिन्दी भाषा को त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत रखा गया है लेकिन यह हमारे लिए बडे दुर्भाग्य की बात है कि इतनी समृद्धिशाली भाषा उच्च स्तर पर एक वैकल्पिक विषय के रूप में है जिससे उच्च शिक्षा में भी हिन्दी की स्थिति अत्यन्त कमजोर है।

देश में भाषाओं के शिक्षण में शिक्षा आयोग (कोठारी आयोग) 1964–1966 के त्रिभाषा सूत्र का उपयोग हो रहा है, जो निम्नवत् है –

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर दो भाषाओं का अध्ययन अनिवार्य होगा, छात्र निम्नांकित तीन भाषाओं के समूह से केवल दो भाषाएं चुन सकेंगे।

- आधुनिक भारतीय भाषाएं
- आधुनिक विदेशी भाषाएं
- शास्त्रीय भाषाएं भारतीय या विदेशी

उपर्युक्त त्रिभाषा सूत्र को भारत सरकार ने 24 जुलाई 1986 को स्वीकार कर लिया था। नई शिक्षा नीति के तहत भाषा का बँटवारा निम्न है जिसमें से कोई तीन भाषा प्रत्येक छात्र को पढनी है।

- मातृभाषा अथवा क्षे़त्रीय भाषा
- (क)– अहिन्दी भाषी क्षेत्रो के लिये हिन्दी अथवा अंग्रेजी

  (ख)– हिन्दी भाषी क्षेत्रों के लिये आधुनिक भारतीय भाषाओं में से एक अथवा अंग्रेजी
- अहिन्दी भाषा क्षेत्रो के लिये आधुनिक भारतीय भाषाओं में से कोई जिसे द्वितीय भाषा के रूप में न लिया गया हो ।

इस प्रकार भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में वर्णित अंग्रेजी को हिन्दी के समकक्ष खड़ा कर दिया है।

डॉ. एस.एस. भार्गव ने नई शिक्षा नीति में हिन्दी की दुर्दशा के लिए जिम्मेदार कौन नामक लेख 12 नवम्बर 1986 को लेख लिखा जो आज समाचार पत्र में प्रकाशित हुआ था में लिखा है कि नई शिक्षा नीति में हिन्दी के दोहरी नीति एक मजाक है। यह कितना विचित्र विरोधाभास है कि हम दुहाई देते है कि हम नई संस्कृति का निर्माण कर रहे हैं, लेकिन नई पीढी के बच्चो का उनकी मातृभाषा में कमजोर करके उनके सुनहरे भविष्य पर कुठारघात नही तो क्या हैं अपनी नीतियों पर पुर्नविचार करना चाहिए देश के भाषागत समस्या को ध्यान में रखते हुए यदि हम अंग्रेजी का मोह छोड दे और सम्पर्क भाषा के रूप

में हिन्दी को अनिवार्य कर दे तो हमारी 55 वर्ष पुरानी समस्या काफी हद तक सुलझ सकती है। वस्तुत त्रिभाषा सूत्र इस प्रकार होना चाहिए था।

- हिन्दी
- मातृभाषा
- अंग्रेजी या भारत की 22 भाषाओं में कोई एक

उच्च स्तर पर हिन्दी का पाठ्यक्रम त्रुटिपूर्ण है हिन्दी को दो भागो में बाँट दिया गया है। भाषा तथा साहित्य भाषा के तहत व्याकरण का अनावश्यक रूप में इतना अधिक महत्व दिया गया है जब कि हिन्दी भाषा के बोल चाल और उसके उपयोग पर अधिक बल देना चाहिए। प्रत्येक छात्र सुगमता पूर्वक हिन्दी बोले अपने विचारों की अभिव्यक्ति हिन्दी में दे इस दिशा में प्रयास किये जाने चाहिए।

उच्चतर स्तर के हिन्दी के पाठ्यक्रम में एक हिन्दी के दोनो भागों को एक कर हिन्दी की साधारण व्याकरण प्राकृत से लेकर हिन्दी के उदर तक सामान्य इतिहास **'अमीर खुसरो'** से लेकर **'निराला'** तक की साहित्य साधना का वर्णन क्षेत्र के अनुसार होना चाहिए।

वास्तव में प्राथमिक स्तर से लेकर उच्चतर स्तर के पाठ्यक्रम में हिन्दी को उपर्युक्त विवेचित डॉ. एस.एस. भार्गव के अनुसार स्थान मिलना चाहिए जिससे अहिन्दी भाषी प्रान्तो में हिन्दी को लेकर छुटभैया नेता देश टूटने की सीमा तक की बात करते है वह विभ्रम दूर हो जो जिससे उनको उनकी हिन्दी के प्रति निष्ठा जागेगी साथ ही अपनी रूचि के अनुसार अन्य दो भाषाओं का चयन भी वे कर सकेगें तथा हिन्दी भाषी क्षेत्र के लोग भी अपनी सुख सुविधानुसार भाषा विकल्प चुन सकेगें।

हिन्दी का महत्व :

हिन्दी एक ऐसा विषय है जो मानव और उसकी संस्कृति के विषय में विषद वर्णन करता है। यह स्वाभाविक और उचित प्रतीत होता है कि प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए और वह पसंद करेगा कि समाज और जिस देश में उसे जन्म मिला है कि उसके विषय में कुछ ज्ञान

प्राप्त कर सकें व्यक्ति ही सदैव अपने पूर्वजों की संस्कृति के विषय में जानने की तीव्र उत्कंठा रहती है।

भाषा की दृष्टि से हिन्दी भाषा का विशेष महत्व है। यह भाषा विश्व की तीन सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में एक है। वेदों ग्रन्थों से लेकर महाभारत तक एवं रामायण सदृश्य उत्कृष्ट ग्रन्थों में सर्व सुलभ सर्ववाच्य संस्करण उपलब्ध है।

हिन्दी के महत्व में राजा राम मोहन राय ने कहा था :

"भारत की सम्पूर्ण भाषाओं में हिन्दी ही एक मात्र एसी भाषा है जो अखिल भारतीय भाषा बनने की क्षमता रखती है।"

हिन्दी भाषा यूरापीय परिवार की प्रमुख भाषा है। लैटिन तथा ग्रीक पर भी हिन्दी की मॉ संस्कृत का प्रचार स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

विलियम जेम्स के अनुसार –

''संस्कृत भाषा ग्रीक भाषा से कही अधिक पूर्ण लैटिन से भी अधिक व्यापक और सक्षम और दोनो से ही अधिक सुसंस्कृत है।''

हिन्दी एक ओर **गुरू नानक देव** की भाषा हैं तो दूसरी ओर अमीर खुसरो, जायसी, खानखाना, रहीम, इंशाअल्ला खॉ की भाषा है इस लिए हिन्दी को हिन्दुओ से जोड़ना या उसे हिन्दी प्रदेशो की भाषा कहना उसके साथ अन्याय करना है। एक समय था जब उर्दू हिन्दी से अलग नही समझी जाती थी यह मान्यता आज के हिन्दी प्रचारको की नही है उसके पीछे लगभग 400 वर्ष की पुरानी परम्परा है और अब से 5–6 दशक पहले तक इस सिद्धान्त को मान्यता भी प्राप्त थी।

हिन्दी के महत्व पर विनोबा जी ने कहा है :–

"हिन्दी के उपकारों को वह भी नही भूल सकते यदि हिन्दी भाषा का आधार नही होता तो कश्मीर से कन्याकुमारी तक और असम से केरल तक के गाँव–गाँव में जाकर भूदान का क्रान्तिकारी संदेश में नही पहुँचा सकता था। इसलिए मुझ पर हिन्दी भाषा का

उपकार है और हिन्दी भाषा ने मेरी बहुत सेवा की है अगर मैं मराठी भाषा लेकर जाता तो महाराष्ट्र से बाहर काम नही होता। "

हिन्दी हिन्द का पर्याय है । जब–जब हिन्द आगे बढा है तो हिन्दी आगे बढ़ी है जब–जब हिन्दी की प्रगति रूकी है तो हिन्दी का विकास भी रूक गया है अगर हिन्द जायेगा तो हिन्दी भी तरक्की नहीं कर सकती। इसलिए कहा जाता है हिन्दी देश की धड़कन है लोगो के दिल की आवाज है हिन्दी ही हिन्द है और हिन्द ही हिन्दी है।

भारतीय संस्कृति अनुपम और अद्वितीय है।

जीवन के विविध पक्षों का सामजंस्य इस संस्कृति में गोचर होता है। भौतिक जगत और आध्यात्मिक का जैसा समन्वय इसमें प्राप्त होता है वैसा अन्यत्र कोई नही। यहाँ धर्म की व्याख्या सर्वजन ग्रहण और सार्वभौम है।

विश्व की अन्य प्राचीन संस्कृतियाँ काल कवलित हो गई परन्तु भारतीय संस्कृति अक्षुण्य है। विश्व के लिए भारतीय संस्कृति की देन असाधारण है अत्यन्त विकसित आधुनिक जगत को आध्यात्मिक प्रगति की शिक्षा भारतीय संस्कृति से ग्रहण करनी चाहिए।

भारतीय संस्कृति धर्म और अध्यात्म से ओत प्रोत है महर्षियों ने धर्म को अभ्युदय मूलक माना है। अतः भारतीय संस्कृति प्रगति को अपना लक्ष्य बनाती है इसमें नवीन चेतना के लिए भारतीय संस्कृति का अध्ययन आवश्यक है। भारतीय संस्कृति के लिए हिन्दी का ज्ञान आवश्यक है।

राजर्षि पुरूषोत्तम दास टंडन ने हिन्दी सम्मेलन **14 सितम्बर 1972** को दिल्ली में हिन्दी शिक्षण पर बल देने की सिफारिश करते हुए कहा –

"हिन्दी का हमारा राष्ट्र के लिए बहुत महत्व है भारतीय साहित्य और संस्कृति की बहुमूल्य धरोहर हिन्दी भाषा है। एक बडी मात्रा में भारतीय आत्मचिन्तन इसी धात्री में प्रस्फुटित हुआ और इस अनेक भारतीय भाषाओं की जननी, भगिनी और छात्र बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। देश के जीवन में तो यह इतनी ओत–प्रोत हो गयी है कि इसे अलग

नही किया जा सकता।"

हमें प्राचीन साहित्य के इतिहास के लिए संस्कृत जाननी पड़ेगी जो बिना हिन्दी ज्ञान के सम्भव नही है, वेदों के अध्ययन से प्राचीन आर्य जातियों की सभ्यता संस्कृति धर्म तथा राजनीति का इतिहास ज्ञात होता है। पुराणों और उपनिषदों में, रामायण और महाभारत जैसे काव्यो में, बौद्वों के त्रिपटक साहित्य में तथा जैनियों के आर्य साहित्य में भारत का प्राचीन इतिहास विद्यमान हैं। उपर्युक्त वर्णित ग्रन्थों की रचना हिन्दी के ही अंग संस्कृत या पाली में हुई है।

"अयं निज परोवेति गणना लघुचेतसाम्।

उदार चरिताम् तु बसुधैम कुटुम्बकम्।।"

हमारी हिन्दी, संस्कृत भाषा ही अन्ततः सर्व साधारण के सुख समृद्धि को सदैव कामना में तत्पर दृष्टिगोचर होती है।

इसे हिन्दी अथवा सम्पूर्ण कहना न्याय संगत है दूसरी भाषाओं में जो गुण पृथक उपलब्ध होते है उन सभी का एक साथ हिन्दी में संग्रह हो गया है।

''सर्वे भवन्तु सुखिना सर्वे सन्तु निरामया।।''

सम्बन्धित भावना केवल भारत वासियों के लिए नहीं हैं अपितु भारतीय चाहते हैं कि समग्रविश्व की मानव जाति सुखी और निरापद हो ऐसे उत्कृष्ट विचार हमें अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए प्रोत्साहन करते है।

हिन्दी भाषा के अध्ययन से भारतीय विरासत और अंतर्राष्ट्रीय की भावना का उदय नहीं होता अपितु हिन्दी भाषा हमें भारत के प्राचीन काल में भी हिन्दी भाषा के गूढ़ अध्ययन से मूर्तिकला, चित्रकला, नाट्यकला और नृत्यकला आदि कलाओं में प्राचीन काल से लेकर अब तक भारत के सामान कोई दूसरा देश नहीं है हम सभी वासियों का परम कर्तव्य है कि हम इस प्रकार की गरिमामयी बहुमुखी राष्ट्र के वैभव को सुरक्षित बनाए रखें।

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव :

"हिन्दी" वस्तुतः फारसी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है हिन्दी का हिन्द से सम्बन्धित । हिन्दी शब्द की निष्पत्ति सिन्धु–सिन्ध से हुई है क्योंकि ईरानी भाषा में "स" को "ह" बोला जाता है इस प्रकार हिन्दी शब्द का वास्तव में सिन्धु शब्द का प्रतिरूप है। कालान्तर में हिन्द शब्द सम्पूर्ण भारत का पर्याय बनकर उभरा । इसी "हिन्द" से हिन्दी शब्द बना।

आज हम जिस भाषा को हिन्दी केन्द्र रूप में जानते है, वह आधुनिक आर्य भाषाओं में से एक है। जो साहित्य की परिनिष्ठ भाषा थी। वैदिक भाषा के साथ–साथ ही बोलचाल की भाषा संस्कृत थी, जिसे लौकिक संस्कृत भी कहा जाता है।

आगे चलकर प्राकृत भाषाओं के क्षेत्रीय रूपो से अपभ्रशं भाषा परिनिष्ठित हुई। इनका समय 500 ई से 1000 ई तक माना जाता है। अपभ्रश भाषा साहित्य के मुख्यतः दो रूप मिलते है पश्चिमी और पूर्वी। अनुमानतः 1000 ई. के आसपास अपभ्रश के विभिन्न क्षेत्रीय रूपो में आधुनिक कार्य भाषाओं का जन्म हुआ। **अपभ्रश से ही हिन्दी भाषा का जन्म हुआ।** आधुनिक आर्य भाषाओं में जिनमें हिन्दी भी है का जन्म 1000 ई. के आस पास हुआ था, किन्तु उसमें साहित्य रचना का कार्य 1150 या इसके बाद प्रारम्भ हुआ तेरहवीं शाताब्दी मे हिन्दी भाषा साहित्य रचना का कार्य प्रारम्भ हुआ ।

हिन्दी भाषा का विकास भारत में वैदिक काल से हुआ है। और आज जब मैने अपने घर आँगन से निकलकर गली मुहल्ले और नुक्कड़ पर जब भी किसी व्यक्ति से हिन्दी में बात की तब भी उस व्यक्ति के मुँह से हिन्दी बोलते–बोलते 2–4 शब्द अंग्रेजी या अन्य भाषाओं के निकल आये जैसे प्रॉब्लम डिस्टव चेयर, फाल्ट, आदि तब ही मैरे मन में ये ख्याल आया कि हम भारतीय–भारोपीय परिवार के होते हुये भी अपनी मातृभाषा को छोडते जा रहे हैं और मैने संकल्प लिया की हर भारतीय नागरिक को हिन्दी भाषा का शुद्ध ज्ञान और उसका आदर करना चाहिए।

1.3 अध्ययन का औचित्य :

अंग्रेजो के भारत में आने के समय भारत के आम नागरिक दैनिक कार्यों में स्थानीय भाषाओं का व्यवहार करते थे उच्च शिक्षा शास्त्रीय चर्चा जैसे कार्यों के लिए संस्कृत का व्यवहार करते थे मुस्लिम सभ्यता के सम्पर्क के बाद किन्ही–किन्ही कार्यो के लिए फारसी का प्रयोग भी होने लगा ।

अंग्रेजो ने सत्ता हथियाने पर पहले तो हिन्दी उर्दू मिश्रित भाषा में सरकारी कामकाज किया पर बाद में अंग्रेजी को सरकारी कामकाज की भाषा बनाया ताकि वह सारा काम उनकी देख रेख में चले। इस काम के लिए उन्हे भारतीय भाषाओं को जानने वाले ऐसे भारतीय चाहिए थे जो अंग्रेजी के जानकर हो अतः उन्होने अंग्रेजी शिक्षा की शुरूआत की जिसका माध्यम भी अंग्रेजी को ही बनाया संस्कृत और हिन्दी से उन्हें कोई लेना देना नही था। अंग्रेजी काल में और उसके पश्चाात समय समय पर शिक्षा के माध्यम की भाषा की समस्या पर चिन्तन मनन किया गया और विभिन्न प्रकार के उपायों के अपनाया भी गया। किन्तु यह एक अत्यन्त सोचनीय विषय है कि भारत जैसे हिन्दी भाषी देश में जहाँ पर 125 करोड़ से ज्यादा (लगभग) जनसंख्या निवास करती है और हिन्दी भाषा को उसका स्थान नही मिल पा रहा है। हिन्दी शिक्षण की बहुत सी समस्याओं को देखते और समझते हुये इसी सापेक्ष में इन समस्याओं को उजागर करने के लिए शोध का विषय "हिन्दी शिक्षण में आधुनिक तकनीकी एवं चुनौतियाँ बनाया।

इस प्रकार प्रस्तुत शोध में समस्या की उत्पत्ति हुई जिसके निराकरण में शोधात्री नें शोध कार्य किया ।

1.4. समस्या कथन :

अध्ययन की आवश्यकता शोधार्थी द्वारा की गयी अनुभूति तथा सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के आधार पर समस्या जिस रूप में प्रकट हुई उसका कथन निम्न प्रकार से किया गया है। **"हिन्दी शिक्षण में आधुनिक तकनीकी एवं चुनौतियाँ "**

1.5 समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण :

परिभाषीकरण से तात्पर्य अध्ययन की समस्या को चिन्तन द्वारा सम्पूर्ण समस्या क्षेत्र से बाहर निकालकर स्पष्ट करना है। –

हमारी समस्या कथन या सम्बन्धित शोध का उददे्श्य हिन्दी शिक्षण में आधुनिक तकनीकी एवं चुनौतियाँ है।

हिन्दी भाषा शिक्षण :–

भाषा तथा शिक्षण यह दोनों ही शब्द अपने में स्वतंत्र प्रकरण है अतः दोनों का अर्थ और उनकी प्रकृति समझना आवश्यक है तभी भाषा शिक्षण का शुद्ध बोध हो सकेगा। शिक्षण प्रकरण में एक अन्य प्रकरण निहित है जैसे अधिगम या सीखना कहते हैं। शिक्षण का लक्ष्य होता है सिखाया इसके बिना शिक्षण का कोई अर्थ नही होता है। कक्षा में शिक्षक का कार्य शिक्षण तथा अधिगम क्रियायें साथ–साथ सम्पादित होती हैं। कक्षा में शिक्षक का कार्य शिक्षण तथा अधिगम की प्रक्रियायें एक साथ चलती है। शिक्षक का कर्तव्य छात्रों को सिखाना होता है।

आधुनिक तकनीकी :–

आज 'तकनीकी' शब्द का प्रयोग व्यापक रूप में किया जाता है यहाँ तक की वर्तमान युग 'तकनीकी का युग' कहा जाता है। आधुनिक समय में तकनीकी का विकास बड़ी तेजी से हो रहा है। मानव उसका उपयोग सभी क्षेत्र में कर रहा है। क्योंकि तकनीकी के प्रयोग से प्रक्रिया प्रभावशाली होती है। कार्यकुशलता का विकास होता है अपेक्षाकृत मितव्ययी हो जाती है।

एच0जे0 लैरिट :–

"तकनीकी का सम्बन्ध समस्याओं का समाधान अधिक प्रभावीशाली ढंग से करना जिससे कार्यकुशलता का विकास हो।"

चुनौतियाँ :–

चुनौतियाँ का शाब्दिक अर्थ है जो हमारे सामने दीवार की तरह खड़ी है और हमें उनका डटकर सामना करना है।

"हिन्दी शिक्षण में आधुनिक तकनीकी एवं चुनौतियाँ"

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

- ❖ हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन ।
- ❖ हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।
- ❖ हिन्दी शिक्षण से सम्बन्धित नवीनतम सामग्री का अध्ययन करना ।

i- ई–बुक्स

ii- वेबसाइट

iii- ब्लॉग

- ❖ हिन्दी शिक्षण वर्तनी जॉचक के विभिन्न आयामों का अध्ययन करना।
- ❖ हिन्दी के विभिन्न सॉफ्टवेयरों की व्यवहारिक कठिनाईयों का अध्ययन करना।
  - वर्तनी जॉचक
  - प्रवाचक
  - हिन्दी शब्दकोश
  - अनुवादक

1.7 अध्ययन का सीमांकन

किसी भी अनुसंधान कार्य में एक महत्वपूर्ण सोपान समस्याओं को सीमांकित करना है। कोई भी शोधार्थी शोध कार्य के लिए किसी विशेष समस्या ग्रस्त क्षेत्र का चुनाव करता है

तथा विस्तृत अध्ययन के स्थान में गहन अध्ययन को वरीयता देता है समस्या का स्वरूप अधिक व्यापक है। समस्या का व्यवहारिक रूप अध्ययन करने के लिए सीमांकन करना आवश्यक होता है। सीमांकन अध्ययन की चाहरदीवारी होता है।

- प्रस्तुत अध्ययन यू0पी0 बोर्ड की पुस्तक तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन में कक्षा 8 की यू0पी0 बोर्ड की हिन्दी की किताब का अध्ययन है।
- प्रस्तुत अध्ययन में अन्य बोर्ड की पुस्तकों का अध्ययन सम्मिलित नहीं है।

  जैसे– N.C.E.R.T. AND C.B.S.E आदि

1.8 शोध विधि :

अनुसंधान की विभिन्न विधियों का वर्गीकरण अनेक प्रकार से किया गया है सामान्यतः हम विधि को ऐतिहासिक विधि, वर्णनात्मक विधि तथा प्रयोगात्मक विधि आदि से जानते हैं। हेनरी लेस्टर स्मिथ ने तो 131 शब्दावलियों की एक सूची प्रस्तुत की है जिसे शिक्षा संबंधी अनुसंधानों मे विभिन्न प्रसंगों व विभिन्न रूपों में प्रयोग किया गया है। वास्तव में हम इन्हें विधियां न कहकर अनुसंधान के प्रकार कहें तो अधिक संगत होगा। प्रत्येक अनुसंधान एक विषेश प्रकार की समस्या का वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करता है। अतः विभिन्न प्रकार की समस्याओं की प्रकृति के ऊपर निर्भर है कि अनुसंधान कैसा होगा? अथवा उसकी विधि क्या होगी? यदि उचित रूप से विचार करें तो सबसे अच्छा होगा कि अनुसंधानकर्ता किसी समस्या के ऐतिहासिक पक्ष का विश्लेषण करे, वर्तमान का अध्ययन कर तथा आवश्यकतानुसार प्रयोग भी करें। इस प्रकार की समन्वित प्रणाली ही सर्वोत्तम प्रणाली है। अनुसंधान की विधियों का वर्गीकरण विद्वानों ने अनेक प्रकार से किया है–

❖ **मूलभूत अनुसंधान (Fundamental or basic research)**

ऐसे अनुसंधान जिनके निष्कर्षों द्वारा किन्ही विशेष वैज्ञानिक नियमों का प्रतिपादन हो, इस वर्ग में आते हैं। इस अनुसंधानकर्ता प्राकृतिक घटनाओं को अपने अध्ययन के निष्कर्षों से संबन्धित करता है। इस प्रकार के अनुसंधान का मुख्य कारण तथ्यों का एकत्रीकरण है क्योंकि तथ्य एकत्रित करने योग्य हैं। मूलभूत अनुसंधान इस प्रकार हमारे ज्ञान में दृष्टि करता है।

❖ **व्यवहृत अनुसंधान– (Applied Research)**

इस वर्ग में वे अनुसंधान आते हैं जिनके द्वारा किसी समस्या विशेष का समाधान आवश्यक हो। इसमें विज्ञान के कुछ विशेष नियमों का किसी विशेष मामले पर प्रभाव जाना जाता है एण्ड्रीआस के अनुसार तथ्यों द्वारा यदि अनुसंधानकर्ता किसी क्रियात्मक समस्या का समाधान करे तो यह अनुसंधान व्यवहृत अनुसंधान कहलाता है।

❖ **प्रविधि अनुसंधान : (Technique Research)**

इस प्रकार के अनुसंधान का संबन्ध निरीक्षण की विधियां संबन्धी समस्याओं के समाधान से है। जब किसी चर के निरीक्षण की अनेक विधियाँ उपलब्ध हों तो प्रविधि अनुसंधान इन विधियों का तुलनात्मक अध्ययन कर इनकी प्रभाविता का स्पष्टीकरण करता है।

❖ **ऐतिहासिक अनुसंधान : (Historical Research)**

इसका संबन्ध भूत से है तथा यह भविश्य को समझने के लिए भूत का विष्लेशण करता है अतः किसी समस्या, घटना अथवा व्यवहार से समुचित समुचित मूल्यांकन के लिए उसकी ऐतिहासिक पृश्ठभूमि से परिचित होना आवष्यक है। यह अनुसंधान षिक्षा मनोविज्ञान एवं अन्य सामाजिक विज्ञानों में चिंतन को नई दिषा एवं नीति निर्धारण में सहायता करता है।

❖ **प्रयोगात्मक अनुसंधान : (Experimental Research)**

प्रयोगात्मक अनुसंधान वैज्ञानिक अनुसंधान पद्धति है। यह एक उन्नत विधि है, जिसके अन्तर्गत हम कोई सूक्ष्म समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं। प्रयोगात्मक विधि अर्थ तथा उपयोगिता की दृष्टि से अत्यंत व्यावहारिक है क्योंकि इसमें अध्ययन नियंत्रित परिस्थितियों में किया जाता है।

❖ **सर्वेक्षण अनुसंधान : (Survey Research)**

इस प्रकार के अनुसंधान का संबन्ध उन सामान्य समस्याओं से है जिसके अन्तर्गत यह निश्चित करते हैं कि कौन सा चर अन्य किसी चर से किसी रूप में किसी सीमा तक सम्बद्ध है इस प्रकार चरों की स्थिति एंव उनके सम्बन्धों की स्थिति का सर्वेक्षण ही इसका मूल उद्देश्य होता है। सर्वेक्षण अनुसंधान की प्रवृत्ति सम्वेषणात्मक (Exploratory) होने के कारण किसी समस्या पर अनुसंधान के प्राथमिक स्तर पर बहुत उपयोगी है।

सर्वेक्षण अनुसंधान को पुनः चार वर्गों में वर्गीकृत किया गया है।

- वर्णनात्मक
- विष्लेशणात्मक
- विद्यालय सर्वेक्षण
- सामाजिक सर्वेक्षण

प्रस्तुत अनुसंधान में प्रयुक्त शोध विधि–

अनुसंधान के मुख्यतः तीन उद्देश्य होते हैं–

- सैद्धान्तिक
- तथ्यात्मक
- उपयोग

ये उद्देश्य अनुसंधान की विभिन्न विधियों एवं षोध व्यूह के प्रयोग करने पर प्राप्त किये जाते हैं। विधि अनुसंधान क्रिया को परिभाशित करने का एक ढंग है। जो समस्या की प्रकृति द्वारा निर्धारित होती है।

प्रस्तुत लघुशोध में शोधकर्ता द्वारा वर्णनात्मक विधि का चयन किया गया है।

सर्वेक्षण विधि के उददे्श्य एवं उपयोग :

यद्यपि अनुसंधान में सर्वेक्षण विधि का मुख्य उददे्श्य यह होता है वर्तमान में इनका रूप क्या है ? अर्थात समस्या या घटना का विवरण करता है। लेकिन बहुत से सर्वेक्षण केवल वर्तमान स्थितियों के विवरण के सीमा से भी बाहर होते है ।

उदाहरण के लिए पाठ्यक्रमों का सर्वेक्षण न केवल वर्तमान पाठ्यक्रम की अच्छाइयों या निर्बलता की सूचनाओं के बारे में सहायता करती है। अपितु परिवर्तन लाने के लिए सुझाव भी दे सकती है।

विवरणात्मक सर्वेक्षण या सामान्य सर्वेक्षण अनुसंधान कर्ता का प्रथम कार्य है, जिसके वह अधिक प्रबल नियंत्रण व वस्तु परक विधि प्रयोग में ला सकें। विवरणात्मक सर्वेक्षण अध्ययन मानव व्यवहार से सम्बन्धित बहुमूल्य ज्ञान का सीधा साधन का स्त्रोत है।

विवरणात्मक अध्ययन विभिन्न प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रमों की योजना बनाने में हमारे लिए सहायक है, विद्यालय जनगणना शायद विवरणात्मक विधि की शैक्षिक योजना बनाने में सबसे अधिक उपयोगिता है। विद्यालय सर्वेक्षण, विद्यालय की विभिन्न पक्षों की समस्याओं के समाधान में सहायक है। अर्थात विद्यालय भवन, विद्यालय का रख रखाव, शिक्षक वर्ग, पाठ्यक्रम, शिक्षक विधियों अधिगम के उददे्श्य आदि सम्मिलित किये जाते है।

सूचनाएं जो सर्वेक्षण विधि से प्राप्त की जाती है –

- **वर्तमान स्थिति क्या है ?**
- **हम क्या चाहते है ?**
- **कैसे उन्हें पा सकते है ?**

हम क्या चाहतें है ? उससे सम्बन्धित सूचनाओं अवाश्यक वस्तुऐं लक्ष्य एवं उददे्श्य के स्पष्टीकरण से प्राप्त होती है, सम्भवतः स्थितियों जो और कहीं वर्तमान में ही या विशेषतः क्या मानते है।

लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सम्भावित साधनों के शोध कार्यों दुसरे के अनुभवों या विशेषज्ञो के विचारों के आधार पर सूचनाएं प्राप्त की जाती है।

सर्वेक्षण अनुसंधान की विशेषताएं :

❖ सर्वेक्षण विधि के अन्तर्गत एक ही समय में बहुत सारे लोगो के बारें आंकडे प्राप्त

किये जाते है।

- ❖ इसका संबंध व्यक्ति की विशेषताओं से नही होता ।
- ❖ इसके अन्तर्गत स्पष्ट परिभाषित समस्या पर कार्य किया जाता है।
- ❖ इसके लिए विशिष्ट एवं कल्पनापूर्वक नियोजन आवश्यक होता है।
- ❖ इसके लिए निष्कर्षो से तार्किक एवं विश्लेषण में सावधानी आवश्यक होती है।
- ❖ इसके लिए निष्कर्षो से तार्किक एवं युक्तिपूर्ण प्रतिवेदन आवश्यक होते है।
- ❖ सर्वेक्षण जटिलता में अधिक परिवर्तन शील होते है।
- ❖ यह वैज्ञानिक सिद्वान्तों के संगठित ज्ञान को विकसित नही करता है।
- ❖ यह भविष्य के विकास के क्रम में सूचना देता है।
- ❖ यह वर्तमान नितियों का निर्धारण करता है वर्तमान समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है।
- ❖ यह कई उपकरणों के निर्माण में सहायता करता है जिसके द्वारा हम शोध प्रक्रिया को पूरा करते है और प्रदत्तों को एकत्रित करतें है।
- ❖ अनुसंधान की आधारशिला अच्छे न्यादर्श पर निर्भर करती है।

1.9 अध्ययन का महत्व :

हिन्दी भाषा देववाणी संस्कृत भाषा से ही उद्घृत है अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से भी इस भाषा का अत्यधिक महत्व है।

भारतीय कवि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा है –

"दे दे भइया दे दे तान हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान" इस सूक्ति से आधुनिक भौतिक समाज में एक क्रान्ति सी लाकर रख दी है। देश के सभी विद्यालयों में हिन्दी को एक अनिवार्य विषय के रूप में रखा गया है।

हिन्दी भारत की मात्रभाषा भी है और हमें इसका सम्मान करना चाहिए। हिन्दी को

प्राइमरी से लेकर उच्चशिक्षा तक हिन्दी को अनिवार्य विषय के रूप में रखा गया है। ताकि कोई भी हिन्दी से अछूता न रह जाये। राष्ट्रभाषा हिन्दी विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास करने में सहायक होगी, भाषा की ध्वनि तत्वों का भेद कराने में सहायक होगी, स्वदेश प्रेम की भावना जाग्रत करेगी, भारतीय सभ्यता और संस्कृति का ज्ञान का विकास करेगी।

द्वितीय अध्याय : सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

2.1 प्रस्तावना :

अनुसन्धान ज्ञान के क्षेत्र में विशिष्ट ज्ञान के लिए नवीन प्रभाव पूर्ण बोध शोध सृजन हेतु सम्बन्धित साहित्य की जानकारी की आवश्यकता अपरिहार्य है। साधारणतः किसी क्षेत्र का साहित्य एक ऐसी आधारशिला है जिस पर समस्त भावी कार्य आधारित होता है। यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तो किया जाने वाला कार्य प्रभावहीन हो जाता है तथा यह भी संभव हो जाता है कि किसी भी कार्य की पुनरावृत्ति ही हो।

2.1.1 सम्बन्धित साहित्य का अर्थ :

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोशों, पत्र–पत्रिकाओं को प्रकाषित तथा अप्रकाषित षोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

2.1.2 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के कार्य :

सम्बन्धित कार्य के सर्वेक्षण के मुख्य रूप में निम्नांकित पाँच कार्य हैं–

- ❖ यह अनुसंधान कार्य के लिए आवश्यक सैद्धान्तिक पृष्टभूमि प्रदान करता है। प्रत्येक ओर धारणा को स्पष्ट करता है।
- ❖ इसके द्वारा यह स्पश्ट होता है कि इस समस्या क्षेत्र में अनुसंधान की स्थिति क्या है। इसके क्या, कब, कहाँ, किसने और कितना अनुसंधान कार्य किया।

इसके ज्ञान द्वारा अपने अध्ययन की योजना बनाना सुविधानक हो जाता है।

- ❖ सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण, अनुसंधान के लिए अपनायी जाने वाली विधि, प्रयोग में लाये जाने योग्य उपकरण तथा आंकड़ों के विष्लेशण के लिए प्रयोग में आने वाली उपर्युक्त विधियों को (स्पष्ट) करता है।
- ❖ यह इस तथ्य का भी आभास देता है कि लिया गया अनुसंधान कार्य किस सीमा तक सफल हो सकेगा और प्राप्त निष्कर्षों की उपयोगिता क्या होगी।
- ❖ इसका सबसे महत्वपूर्ण कार्य समस्या के परिभाषीकरण, अवधारणा बनाने, समस्या के सीमाकंन और परिकल्पना के निर्माण में सहायक होता है।

2.1.3 सम्बन्धित साहित्य का महत्व :

सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण की उपयुक्तता को कुछ विद्वान निम्न शब्दों में दर्शाता है–

गुड़ बार तथा स्केट्स–''एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र, अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र से समन्धित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।'' (राव, पारस पृ. 95)

जॉन डब्ल्यू बेस्ट– ''व्यावहारिक दृष्टि से सारा मानव ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों में प्राप्त किया जा सकता है। अन्य जीवों के अतिरिक्त जो प्रत्येक पीढ़ी में नये सिरे से प्रारम्भ करते हैं, मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों भंडार में मानव का निरन्तर योग सभी क्षेत्रों में उसके

विकास का आधार है।''

2.2 भारत में हुये शोधकार्य :

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पूर्णता प्रदान करने के लिए अनुसन्धानकर्ता ने अपने विषय से सम्बन्धित कार्यों को देखा। कार्य की खोज में कई स्रोंतो का सहारा लिया है। प्रस्तुत समस्या से सम्बन्धित कुछ शोध कार्य अग्रलिखित हैं।

1. सन् 1977 में डिपार्टमेंट ऑफ क्म्प्यूटर साइंस इंजीनियरिंग आई–आई टी कल्यानपुर में श्री विनीत चैतन्य ने अष्टाध्यायी का अध्ययन किया और उन्होंने निष्कर्ष रूप में कहा कि– ''हिन्दी भाषा को प्राथमिक स्तर से बेसिक व्याकरण की संस्कृत से साम्यता जानकर अपने विषय के अध्ययन में रूचि जाग्रत कर सके। जिस प्रकार रेखा गणित पढ़ने से बालकों का बौद्धिक विकास होता है, उसी प्रकार हिन्दी भाषा का ज्ञान कराकर बालकों का बौद्धिक विकास किया जाता है।

2. सन् 1978 में आगरा विश्वविद्यालय की एम.एड. छात्रा अनुजा शर्मा ने ग्राम व शहर के विद्यार्थियों को ''हिन्दी अध्ययन की अभिवृत्ति'' पर एक शोध प्रबन्ध लिखा और निष्कर्ष रूप में निम्न समस्याओं को प्रस्तुत किया।

- उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का अरूचिपूर्ण पाठ्यक्रम
- अनुपयुक्त शिक्षण विधि
- हिन्दी कक्षा का अभाव
- शिक्षकों की लापरवाही

3. सन् 1969 ई. में आचार्य नरेन्द्र देव महाविद्यालय की एम.एड. छात्रा श्रीमती शीला रस्तोगी ने उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिन्दी भाषा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष रूप में कहा कि हिन्दी हमारी मातृभाषा है। इसलिए विद्यार्थियों में हिन्दी के पठन अध्ययन–अध्यापन में काफी रूचि है।

हिन्दी में सभी भारतीय और विदेशी भाषाएं समाहित हैं।

अतः हिन्दी की शिक्षा से न केवल दूसरी भाषाओं को समझने में सहायता मिलेगी वरन् प्राचीन ज्ञान भण्डार के अपार ज्ञान तक पहुंचने में भी सहायता मिलेगी। जिसकी प्राप्ति के लिए दुनिया के अन्य देश भी भारतीय ग्रन्थों का अध्ययन करने में मशगूल है। अतः प्रस्तुत शोधकार्य तथ्य को ध्यान में रखकर किया गया है।

शशि मंगल (2010) '' केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा 9 तथा 10 की हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों में निहित मुल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन'' वनस्थली विश्वविद्यालय राजस्थान।

केन्द्रीय माध्यमिक की कक्षा–9 की हिनदी की गद्य पाठ्य पुस्तकों में निहित मूल्यों का एन.सी.ई.टी. द्वारा प्रस्तावित मूल्यों के सन्दर्भ में समीक्षात्मक अध्ययन।

लता कमल (2010) ''हिन्दी विषय शिक्षण द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का विकास एक अध्ययन'' वनस्थली विद्यापीठ विश्वविद्यालय , राजस्थान।

उद्देश्य :

1. नियंत्रित व प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के सृजनात्मक के मध्य फलांको की तुलना करना।
2. छात्र/छात्राओं की सृजनात्मकता के मध्य फलाकों की तुलना करना।

निष्कर्ष :

हिन्दी से सम्बन्धित उपर्युक्त शोधों में हिन्दी के शिक्षण संस्थान, हिन्दी विद्यार्थियों में आंग्ल भाषा की प्रवीणता क अध्ययन किया गया है किन्तु हिन्दी शिक्षण के आधुनिक आयामों के सम्बन्ध में कोई अध्ययन नहीं हुआ।

तृतीय अध्याय

हिन्दी शिक्षण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

3.1 हिन्दी की व्युत्पत्ति :

हिन्दी भाषा का इतिहस लगभ एक हजार वर्ष पुराना है। सामान्यतः प्राकृत की अन्तिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का अविर्भाव स्वीकार किया जाता है। उस समय उपभ्रंश के कई रूप थे और उनमें सातवीं–आठवीं शताब्दी से ही 'पद्य' रचना प्रारम्भ हो गयी थी। हिन्दी भाषा व साहित्य के जानकार अपभ्रंश की अंतिम अवस्था 'अवहट्ट' से हिन्दी का उद्भव स्वीकार करते हैं। चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' ने इसी अवहट्ट को पुरानी हिन्दी नाम दिया। अपभ्रंश या प्राकृतभास हिन्दी में यह परम्परा कई वर्षों तक चलती रही पुरानी अपभ्रंश या प्राकृतभाषा और बोलचाल की देशी भाषा का प्रयोग निरन्तर बढ़ता गया। इस भाषा को विद्यापति ने देशी भाषा कहा, किन्तु यह निर्णय सरल नहीं है कि किसी शब्द का प्रयोग इस भाषा के लिए कब और किस देश में प्रारम्भ हुआ।

इस धरती पर केवल मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो भाषा से सम्पृक्त है। भाषा के कारण ही मनुष्य अन्य जीवों से अलग और उत्तम है। मनुष्य आज जो भाषा बोल रहा है वह ध्वनियों, शब्दों से ही विकसित हुई है। विकास की इस यात्रा में भाषा निरन्तर परिष्कृत होती रही है। मनुष्य जैसे–जैसे सभ्यता की ओर बढ़ता रहा, वैसे–वैसे भाषा का परिष्कार होता रहा। इससे स्पष्ट है कि मानव विकास के साथ–साथ भाषा भी विकसित होती रही है।

भाषा का अर्थ :

अपने विचारों को दूसरों को समझााने का और दूसरों की बातों को समझने का माध्यम भाषा है अर्थात् विचारों की अभिव्यिक्ति और समझने का माध्यम ही भाषा कहलाती है। भाषा के विकास में निम्न तीन शक्तियाँ आधार हैं–

- बुद्धि

- विचार
- चिन्तन शक्ति

निस्सन्देह कुछ भाव और विचार विभिन्न संकेतों द्वारा भी प्रदर्शित और ग्रहण किए जा सकते है, परन्तु संकेतों द्वारा सामाजिक जीवन का कार्य और व्यवहार नहीं चल सकता। अतः भाषा का स्थान अन्य कोई माध्यम नहीं ले सकता।

व्युत्पत्ति की दृष्टि से देखें तो भाषा शब्द संस्कृत की 'भाष' धातु से बना है। जिसका अर्थ व्यक्त वाक् 'व्यक्तायां वाचि' अर्थात् प्रकट की गई या उच्चारित की गई वाणी है। भाषण शब्द इसी धातु से बनता है, परनतु भाषण और भाषा के अर्थों में अन्तर है। भाषण व्यक्तिगत होता है और इसका सम्बन्ध व्यक्ति विशेष से रहता ह, जबकि भाषा सामाजिक वस्तु है और इसका सम्बन्ध सम्पूर्ण समाज से रहता है। इंगलिश में भाषा के लिए लैग्वेज (Language) शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसका सम्बन्ध लैटिन के शब्द लिंग्वा (Lingva–चिन्ह) से एवं फ्रांसीसी शब्द लांग (Langue-Language) से है। इस प्रकार लैंग्वेज शब्द भी मानवीय बोली (Humen-Speech) का ही वाचक है। कुछ भाषा विज्ञानियों ने भाषा शब्द का प्रयोग सभी प्राणियों द्वारा भावों और विचारों की अभिव्यक्ति के लिये प्रयुक्त किये जाने वाले सभी साधनों के लिये किया है, परन्तु वह असंगत है। पशु–पक्षियों द्वारा उच्चारित ध्वनियों के लिये भाषा शब्द का प्रयोग लाक्षणिक है। हिन्दी, पंजाबी आदि में इसके लिए 'बोली' शब्द का प्रयोग किया जाता है, जैसे कुत्ते की बोली, बिल्ली की बोली, कौए की बोली आदि। यद्यपि यहां भी उसका प्रयोग लाक्षणिक ही है और उसे मनुष्य की बोली की समता नहीं दी जा सकती।

लोक–व्यवहार में भाषा शब्द का प्रयोग बड़े व्यापक रूप में होता है। सामान्यतः मनुष्य द्वारा प्रयुक्त की जाने वाली सभी सभ्य एवं असभ्य बोलियों को, प्रान्तीय एवं स्थानीय बोलियों को शुद्ध परिनिष्ठित भाषा को एवं राष्ट्रभाषा को भाषा ही कहा जाता है। इतना ही नहीं विभिन्न व्यक्तियों की उनकी निजी विशेषताओं से युक्त बोली को भी भाषा कहा जाता

है। जैसे– भगवान राम की भाषा, श्रीकृष्ण की भाषा, गांधी जी की भाषा, नेहरू जी की भाषा आदि। किसी नगर अथवा ग्राम में रहने वाली विभिन्न जातियों की बोलियों को भाषा कह दिया जाता है। जैसे ब्राह्मणों की भाषा, ठाकुरों की भाषा, बनियों की भाषा, धोबियों की भाषा आदि। इसी प्रकार विभिन्न कार्य करने वालों की बोली को भी भाषा कहा जाता है। जैसे अध्यापकों की भाषा, सुनारों की भाषा, लुहारों की भाषा, जाटों की भाषा, नाइयों की भाषा आदि। एक स्थान पर रहने वाले विभिन्न धर्मावलम्बियों की बोलचाल में व्यक्त बोली को भी भाषा कहते हैं। जैसे– हिन्दुओं की भाषा, मुसलमानों की भाषा, ईसाइयों की भाषा, सिक्खों की भाषा, जैनियों की भाषा आदि। इसी प्रकार वीरों की भाषा, कायरों की भाषा, संतों की भाषा, कवियों की भाषा, मूर्खों की भाषा, पुलिस की भाषा, तलवार की भाषा आदि प्रयोग देखे जा सकते हैं। इनके अतिरिक्त योगियों और संतों की रहस्यमयी भाषा, ठगों की कृत्रिम भाषा, प्रेमियों की रागमयी भाषा आदि को भी व्यवहार में देखा जा सकता है। इस प्रकार लोक व्यवहार में भाषा शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में उपलब्ध होता है।

भाषा की परिभाषाएं :

सुमित्रानन्दन पंत के अनुसार– भाषा संसार का नादमय चित्र है, ध्वनिमय स्वरूप है, यह विश्व की हृदयतंत्री संझार है, जिनके स्वर में अभिव्यक्ति होती है।

महर्षि पतंजलि के अनुसार– ''जो वाणी में प्रयुक्त होती है, उसे भाषा कहते हैं।''

कामता प्रसाद गुरू के अनुसार– ''भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली–भांति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार स्वयं स्पष्टतया समझ सकता है।''

डॉ0 श्यामसुन्दर दास के अनुसार– ''मनुष्य और मुनष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और गति का आदान–प्रदान करने के लिए व्यक्ति ध्वनि–संकेतों का जो व्यवहार होता है उसे भाषा कहते है।''

भोलानाथ तिवारी के अनुसार– ''भाषा सुनिश्चित प्रयत्न के फलस्वरूप मनुष्य के मुख

या वाणी से निःसृत वह सार्थक ध्वनि समष्टि है, जिसका विश्लेषण और अध्ययन किया जाता है।''

बाबू राम सक्सेना के अनुसार– ''भाषा से तात्पर्य, विचारों और भावों का व्यक्तिकरण प्रमुख रूप से श्रोता, ग्राह्य ध्वनि चिन्हों से प्रमाणित होता है। गौण रूप से दर्शन संकेत अथवा स्पर्श द्वारा ग्राह लेख, मुद्रण आदि से है।''

डॉ0 उदय नारायण तिवारी के अनुसार– ''भाषा मनुष्य के प्रतीकात्मक कार्यों का प्राथमिक एवं बहुविस्तृत रूप है।''

भाषा की प्रकृति व विशेषताएं :

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर भाषा की प्रकृति व विशेषताओं को अग्र प्रकार वर्णित किया जा सकता है–

- भाषा भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है।
- भाषा का विकास, अर्जन और प्रयोग तीनों ही समाज में होते हैं।
- भाषा का हस्तान्तरण होता है। भाषा परम्परा से प्राप्त होने के साथ–साथ अर्जित भी करनी पड़ती है। सीखने से भाषा का अर्जन होता है।
- भाषा समाजीकरण का एक आयाम है। व्यक्ति जिस समाज में रहता है, उसकी भाषा सीखता है।
- भाषा मौखिक तथा लिखित प्रतीकों, शब्दों, संकेतों व चिन्हों को समन्वित करती है।
- भाषा अनुकरण से सीखी जाती है। बालक माता–पिता, भाई–बहिन, अध्यापकों, पड़ोसियों तथा परिवार के अन्य वरिष्ठ सदस्यों का अनुकरण कर भाषा सीखता है।
- भाषा एक सतत् परिवर्तनशील प्रक्रिया है। भाषा का कोई स्थायी और अन्तिम स्वरूप नहीं होता।
- भाषा मनुष्य की वह कला है जिसमें प्रमुख रूप से बोलने, पढ़ने तथा सुनने का

कौशल सम्मिलित होता है।

- भाषा में परिवर्तन की गति बहुत धीमी होती है और अलक्षित होती है। पर्याप्त समय के पश्चात् ही पता चलता है।
- किसी भी भाषा के बोलने पर वहाँ के स्थान, जलवायु और सभ्यता का प्रभाव अवश्य पड़ता है। शिक्षितों और अशिक्षितों की भाषा में अन्तर होता है।

उद्‌भव :

प्रारम्भ में हिन्दी में हिन्दी शब्द का प्रयोग विदेशी मुसलमानों ने किया था। इस शब्द से उनका तात्पर्य 'भारतीय भाषा' का था।

हिन्दी भारोपीय परिवार की आधुनिक काल की प्रमुख भाषाओं में से एक है। भारतीय आर्य भाषाओं का विकास क्रम इस प्रकार है–

संस्कृत–पाली–प्राकृत–अपभ्रंश

- भाषा नही की धारा के समान चंचल होती है यह रूकना नहीं जानती, यदि कोई भाषा को बलपूर्वक रोकना भी चाहे तो यह उसके बंधन को तोड़ आगे निकल जाती है। यही भाषा की स्वाभाविक प्रकृति और प्रवृत्ति है।
- संस्कृत भारत की सबसे प्राचीन भाषा है जिसे आर्य भाषा या देव भाषा भी कहा जाता है। हिन्दी इसी आर्य भाषा संस्कृत की उत्तराधिकारिणी मानी जाती है।

3.2 हिन्दी भाषा का विकास :

हिन्दी भाषा के विकास क्रम में भाषा की पूर्वोतृ गत्यात्मकता और समयानुकूल बदलते रहने की स्वाभाविक प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

- हिन्दी का जन्म संस्कृत की ही कोख से हुआ है, जिसके साढ़े तीन हजार से अधिक वर्षों के इतिहास को तीन भागों में विभाजित करके हिन्दी की उत्पत्ति का विकास क्रम निर्धारित किया गया है।

➢ इस काल में वेदों, ब्राह्मणग्रन्थों, उपनिषदों के अलावा वाल्मीकि, व्यास, अश्वघोष, भाष कालिदास तथा माध आदि की संस्कृत रचनाओं का सृजन हुआ।

3.2.2 मध्यकाल में हिन्दी

1. मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा–काल 500 ई.पू. से 1 ईसवी

i- संस्कृत कालीन बोलचाल की भाषा विकसित होते होते यह कहें कि सरल होते–होते 500 ई.पू. के बाद काफी बदल गई जिसे पालि नाम दिया गया।

ii- सबसे पुरानी प्राकृत और भारत की प्रथम देशी भाषा कहा जाता है। 'मगध प्रान्त' में उत्पन्न होने के कारण श्रीलंका के लोग 'मागधी भी कहते हैं।

iii- बौद्ध ग्रन्थों की पालि भाषा में बोलचाल की भाषा का विष्ट और मानक रूप प्राप्त होता है।

iv- इस काल में आते–आते क्षेत्रीय बोलियों की सख्या तीन से बढ़कर चार हो गई।

- ➢ पश्चिमोत्तरीय
- ➢ मध्यदेशीय
- ➢ पूर्वी
- ➢ दक्षिणी

2. प्राकृत (1 ई.–500 ई.) :

पहली ईसवी तक आते–आते यह बोलचाल की भाषा और परिवर्तित हुई तथा इसको प्राकृत की संज्ञा दी गई।

3. अपभ्रंश (500 ई. से 1000 ई.)

➢ भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से अपभ्रंश भारतीय आर्यभाषा के मध्यकाल की अन्तिम अवस्था है जो प्राकृत और आधुनिक भाषाओं के बीच की स्थिति है।

➢ प्रसिद्ध भाषा विज्ञानी डॉ. भोलानाथ तिवारी ने विभिन्न प्राकृतों से विकसित अपभ्रंश के निम्नलिखित सात भेद स्वीकार किए हैं जिनसे आधुनिक भारतीय उप भाषाओं का जन्म हुआ।

- शौरसेनी–पश्चिमी हिन्दी राजस्नानी और गुजराती
- ब्राचड़– सिन्धी
- रवस–पहाड़ी
- महाराष्ट्री–मराठी
- मगधी– बांग्ला, उड़िया व असमिया
- अर्ध मगधी– पूर्वी हिन्दी

अतः कहा जा सकता है कि हिन्दी भाषा का विकास अपभ्रंश के शौरसेनी, मगधी और धर्ममगधी रूपों से हुआ है।

3.2.3 आधुनिक काल में हिन्दी का विकास :

हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल तत्कालीन राजनैतिक गतिविधियों से प्रभावित हुआ। इसको हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ युग माना जा सकता है, जिसमें पद्य के साथ–साथ गद्य, समालोचना, कहानी, नाटक व पत्रकारिता का भी विकास हुआ।

सन् 180 वि. के उपरान्त भारत में अनेक यूरोपीय जातियां व्यापार के लिये आईं। उनके सम्पर्क से यहाँ पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव पड़ना आरम्भ हुआ। विदेशियों ने यहाँ के देशी राजाओं की पारस्परिक फूट का लाभ उठाकर अपने पैर जमाने में सफलता प्राप्त की जिसके परिणाम स्वरूप हाँ अपने शासन कार्य को सुचारू रूप से चलाने एवं अपने धर्म प्रचार के लिये जन साधारण की भाषा को अपनाया। इस कार्य के लिये गद्य ही अधिक उपयुक्त होती है। इस कारण आधुनिक युग की मुख्य विशेषता गद्य की प्रधानता रही। इस काल में होने वाले मुद्रण कला के आविष्कार ने भाषा–विकास में महान योगदान दिया।

स्वामी दयानन्द ने भी आर्य समाज के ग्रन्थों की रचना राष्ट्रभाषा हिन्दी में और अंग्रेज मिशनरियों ने भी अपनी प्रचार पुस्तकें हिन्दी गद्य में ही छपवाईं। इस तरह विभिन्न मतों के प्रचार कार्य में भी हिन्दी गद्य का समुचित विकास हुआ।

इस काल में राष्ट्रीय भावना का विकास हुआ। इसके लिये श्रृंगारी ब्रजभाषा की अपेक्षा खड़ी बोली उपयुक्त समझी गई। समय की प्रगति के साथ गद्य और पद्य दोनों में खड़ी बोली का पर्याप्त विकास हुआ। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र तथा बाबू अयोध्या प्रसाद खत्री ने खड़ी बोली के दोनों रूपों को सुधारने में महान प्रयत्न किया। उन्होंने अपनी सर्वतोन्मुखी प्रतिभा द्वारा हिन्दी साहित्य की सम्यक् सर्वधना की।

इस काल के आरम्भ में राजा लक्ष्मण सिंह, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, जगन्नाथ दा रत्नाकर, श्रीधर पाठक, रामचन्द्र शुक्ल आदि ने ब्रजभाषा में काव्य रचना की। इनके उपरान्त भारतेन्दु जी ने गद्य का समुचित विकास किया और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इसी गद्य को प्रांजल रूप प्रदान किया। उसकी सत्प्रेरणाओं से अन्य लेखकों और कवियों ने भी अनेक भांति की काव्य रचना की। इसमें मैथिली शरण गुप्त, रामचरित उपाध्याय, नाथूराम शर्मा, शंकर लाल, भगवानदीन, रामनरेश त्रिपाठी, जयशंकर प्रसाद, गोपाल शरण सिंह, माखनलाल चतुर्वेदी, अनूप शर्मा, रामकुमार वर्मा, श्यामनरायण पाण्डेय, दिनकर, सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा आदि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति के प्रभाव से हिन्दी, काव्य में भी स्वछन्द (अतुकांत) छदों का प्रचलन हुआ।

इस काल में गद्य, निबन्ध, नाटक उपन्यास, कहानी, समालोचना, तुलनात्मक आलोचना, साहित्य आदि सभी रूपों का समुचित विकास हुआ। इस युग के प्रमुख साहित्यकार निम्नलिखित है। (चौहान, रीता : पृष्ठ संख्या– 46–55)

समालोचना :

आचार्य द्विवेदी जी, पद्म सिंह शर्मा, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डा. रामकुमार वर्मा, श्यामसुन्दरदास, डॉ. रामरतन भटनागर आदि है।

कहानी लेखक :

प्रेमचन्द, विनोद शंकर व्यास, प्रसाद, पंत, गुलेरी, निराला, कौशिक, सुदर्शन, जैनेन्द्र, हृदयेश, आदि।

उपन्यासकार :

प्रेमचन्द, प्रतापनारायण श्रीवास्तव, प्रसाद उग्र, हृदयेश, जैनेन्द्र, भगवतीचरण, वृंदावन लाल वर्मा, गुरूदत्त आदि।

नाटककार :

प्रसाद, सेठ गोविन्ददास, लक्ष्मीनारायण मिश्र, उदयशंकर भट्ट, रामकुमार वर्मा आदि है।

निबन्ध लेखक :

आचार्य द्विवेदी, माधव प्रसाद शुक्ल, रामचन्द्र शुक्ल, बाबू श्यामसुन्दर दास, पद्म सिंह अध्यापक पूर्ण सिंह आदि है।

चतुर्थ अध्याय

हिन्दी के संस्थान

4.1 प्रस्तावना :

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मत्रालय के आधीन 'केन्द्रीय हिन्दी संस्थान एक उच्चतर शैक्षिक और शोध संस्थान है। संविधान के अनुच्छेद 351 के दिशा निर्देशों के अनुसार हिन्दी को समर्थ और सक्रिय बनाने के लिए अनेक शैक्षिक, सांस्कृतिक और व्यावहारिक अनुसन्धानों के द्वारा हिन्दी शिक्षण–प्रशिक्षण हिन्दी भाषा विश्लेषण भाषा का तुलनात्मक अध्ययन तथा शिक्षण सामग्री आदि के निर्माण को संगठित और परिवक्व रूप देने के लिए सन् 1961 में भारत सरकार के तत्कालीन 'शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय ने 'केन्द्रीय हिन्दी संस्थान' की स्थापना उत्तर प्रदेश के आगरा नगर में की थी। हिन्दी संस्थान का प्रमुख कार्य हिंदी भाषा से सम्बन्धित शैक्षणिक कार्यक्रम आयोजित करना, शोध कार्य करना और साथ ही हिन्दी के प्रचार व प्रसार में अग्रणी भूमिका निभाना है। प्रारम्भ में हिन्दी संस्थान का प्रमुख कार्य 'अहिंदी भाषी क्षेत्रों' के लिए योग्य, सक्षम और प्रभावकारी हिन्दी अध्यापकों को ट्रेनिंग कॉलेज और स्कूली स्तरों पर शिक्षा देने के लिए प्रशिक्षित करना था, किन्तु बाद में हिनदी के शैक्षिक प्रचार–प्रसार और विकास को ध्यान में रखते हुये संस्थान ने अपने दृष्टिकोण और कार्य क्षेत्र को विस्तार दिया, जिसके अन्तर्गत हिंदी शिक्षण प्रशिक्षण हिंदी भाषा–परक, शोध–भाषा विज्ञान तथा तुलनात्मक साहित्य आदि विषयों से सम्बन्धित मूलभूत वैज्ञानिक अनुसंधान कार्यक्रमों को संचालित करना प्रारम्भ कर दिया और साथ ही विविध स्तरों के शैक्षिक पाठ्यक्रम, शैक्षिक सामग्री अध्यापक निर्देशिकाएं आदि तैयार करने का कार्य भी प्रारम्भ किया गया। इस प्रकार के विस्तृत दृष्टिकोंण और कार्यक्रमों के आयोजन से हिन्दी संस्थान का कार्यक्षेत्र अत्याधिक विस्तृत और विशाल हो गया। इन सभी कार्यक्रमों के कारण हिन्दी संस्थान न केवल भारत में ही नहीं वरन् अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी ख्याति और मान्यता प्राप्त की।

4.2 केन्द्रीय हिन्दी संस्थान :

भारत सरकार के 'मानव संसाधन विकास मंत्रालय' के आधीन केन्द्रीय संस्थान हैं। संविधान के अनुच्छेद 351 के दिशा–निर्देशों के अनुसार हिन्दी को समर्थ और सक्रिय बनाने के लिजए अनेक शैक्षिक, सांस्कृतिक और व्यवहारिक अनुसन्धानों के द्वारा हिन्दी शिक्षण–प्रशिक्षण, हिन्दी भाषा विश्लेषण, भाषा विश्लेषण, भाषा का तुलनात्मक अध्ययन तथा शिक्षण सामग्री आदि के निर्माण को संगठित और परिवक्व रूप देने के लिए सन् 1961 में भारत सरकार के तत्कालीन 'शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय' ने केन्द्रीय हिन्दी संस्थान' की स्थापना उत्तर पदेश के आगरा नगर में की थी। हिन्दी संस्थान का प्रमुख कार्य हिन्दी भाषा से सम्बन्धित शैक्षणिक कार्यक्रम आयोजित करना, शोध कार्य कराना और साथ ही हिन्दी के प्रचार व प्रसार में अग्रणी भूमिका निभाना है प्रारम्भ में हिन्दी संस्थान का प्रमुख कार्य अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के लिए योग्य सक्षम और प्रभावकारी हिन्दी अध्यापकों को ट्रेनिंग कॉलेज और स्कूली स्तरों पर शिक्षा देने के लिए प्रशिक्षित करना था, किन्तु बाद में हिन्दी के शैक्षिक प्रचार–प्रसार और विकास को ध्यान में रखते हुये संस्थान में अपने दृष्टिकोंण और कार्यक्षेत्र को विस्तार दिया, जिसके अन्तर्गत हिन्दी शिक्षण–प्रशिक्षण, हिन्दी भाषा–परक शोध, भाषा विज्ञान तथा तुलनात्मक साहित्य आदि विषयों से सम्बन्धित मूलभूत वैज्ञानिक अनुसंधान कार्यक्रमों को संचालित करना प्रारम्भ कर दिया और साथ ही विविध स्तरों के शैक्षिक पाठ्यक्रम, शैक्षिक सामग्री, अध्यापक निर्देशिकाएं आदि तैयार करने का कार्य भी प्रारम्भ किया गया। इस प्रकार के विस्तृत दृष्टिकोण और कार्यक्रमों के आयोजन से हिन्दी संस्थान का कार्यक्षेत्र अत्यधिक विस्तृत और विशाल हो गया। इन सभी कार्यक्रमों के कारण हिन्दी संस्थान में केवल भारत में ही नहीं वरन् अन्तर्राष्ट्रीय स्तर भी ख्याति और मान्यता प्राप्त की।

हिन्दी संस्थान की स्थापना :

हिन्दी भाषा के अखिल भारतीय स्वरूप को सामान्य स्तर का बनाने के लिए और साथ ही पूरे भारत में हिन्दी भाषा के शिक्षण को सबल आधार देने के उद्देश्य से 19 मार्च

1960 ई. को भारत सरकार के तत्कालीन 'शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय' ने एक स्वायत्तशासी संस्था 'केन्द्रीय हिन्दी शिक्षण मंडल' का गठन किया और 1 नवम्बर 1960 को इस संस्थान का लखनऊ में पंजीकरण करवाया गया। (Webliography-1)

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के केन्द्र :

भारत सरकार द्वारा 'केन्द्रीय हिन्दी शिक्षण मंडल' को 'अखिल भारतीय हिन्दी प्रशिक्षण महाविद्यालय' को संचालित करने का पूर्ण दायित्व सौंपा गया। 1 जनवरी 1963 को अखिल भारतीय हिन्दी प्रशिक्षण महाविद्यालय का नाम बदलकर 'केन्द्रीय हिन्दी संस्थान' कर दिया गया। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान का मुख्यालय आगरा में है। मुख्यालय के अतिरिक्त इसके 8 केन्द्र हैं–

1. दिल्ली
2. हैदराबाद
3. गुवाहाटी
4. शिलांग
5. मैसूर
6. दीमापुर
7. भुवनेश्वर
8. अहमदाबाद

4.2.1 दिल्ली केन्द्र :

दिल्ली केन्द्र की स्थापना वर्ष 1970 में हुई सर्वप्रथम राजभाषा क्रियान्वयन योजना के लिए केन्द्रीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिये गहन हिन्दी शिक्षण कार्यक्रम और विदेशियों के लिए हिन्दी शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए गए। कार्य की अधिकता के कारण वर्ष 1993 में विदेशियों के लिए शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम की छात्रवृत्ति आधारित

योजना आगरा मुख्यालय में स्थानान्तरित कर दी गई।

वर्तमान में दिल्ली केन्द्र में स्ववित्त पोषित योजना के अन्तर्गत विदेशियों के लिये हिन्दी पाठ्यक्रम, सांध्यकालीन पोस्ट एम.ए., अनुप्रयुक्त हिन्दी भाषा विज्ञान डिप्लोमा, पोस्ट एम.ए. अनुवाद सिद्धान्त एवं व्यवहार डिप्लोमा, तथा पोस्ट एम. ए., जनसंचार एवं पत्रकारिता पाठ्यक्रम संचालित किये जाते हैं। पंजाब एवं जम्मू कश्मीर राज्यों के स्कूल एवं कॉलेज स्तर के हिन्दी अध्यापकों के लिये 3 से 4 सप्ताह के नवीकरण पाठ्यक्रमों का आयोजन भी दिल्ली केन्द्र द्वारा किया जाता है।

स्थापना :

भारत सरकार के शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय द्वारा सन् 1961 ई. में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के शासी निकाय केन्द्रीय हिन्दी शिक्षण मण्डल की स्थापना की गई थी। तथा अखिल भारतीय स्तर पर हिन्दी के शिक्षण–प्रशिक्षण और शोध–कार्य के लिये 1963 में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा की स्थापना की गई थी।

1970 में संस्थान ने दिल्ली में अपने एक परिसर की स्थापना की, जिसे बाद में दिल्ली केन्द्र के रूप में मान्यता मिली। 1969 में शिक्षा मंत्रालय में भाषा वैज्ञानिकों की राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई थी। जिसमें यह प्रस्ताव रखा गया था कि भारत सरकार के वरिष्ठतम अधिकारियों के लिए विशेष रूप से तीन महीने का गहन हिन्दी शिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ किया जाए क्योंकि वरिष्ठ अधिकारी अपने कार्यों को छोड़कर हिन्दी–शिक्षण योजना की कक्षाओं में जा नहीं पाते। इस सन्दर्भ में मंत्रालय ने संस्थान से कहा कि वह इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए तीन महीने की अवधि के गहन हिन्दी शिक्षण पाठ्यक्रम की योजना प्रस्तुत करे और दिल्ली में वरिष्ठ अधिकारियों के प्रशिक्षण के लिए आवश्यक व्यवस्था करें।

अब तक पूर्णकालिक क्षेत्रीय निदेशक :

क्रम संख्या	क्षेत्रीय निदेशकों के नाम	कार्य की अवधि
1.	प्रो. वी. रा. जगन्नाथन	1970–1973

2.	प्रो. रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव	1973–1976
3.	प्रो. बालगोविन्द्र मिश्र	1979–1979
4.	प्रो. अशोक कालरा	1979–1980
5.	प्रो. रामनाथ सहाय	1980–1981
6.	प्रो. वी. रा. जगन्नाथन	1981–1983
7.	प्रो. मा. गो. चतुर्वेदी	1983–1989
8.	प्रो. सुरेश कुमार	1989–1991
9.	प्रो. सूरज भान सिंह	1991–1994
10.	प्रो. रवि प्रकाश गुप्त	1995–1998
11.	प्रो. शारदा भसीन	1998–2000
12.	प्रो. श्रीशचन्द्र जैसवाल	2001–2003
13.	प्रो. रवि प्रकाश गुप्त	2009–
14.	प्रो. परमलाल अहिरवाल	
15.	प्रो. गीता शर्मा	
16.	डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा	

4.2.2 हैदराबाद केन्द्र :

हैदराबाद केन्द्र की स्थापना वर्ष 1976 में हुई। शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अन्तर्गत यह केन्द्र स्कूलों/कॉलेजों एवं स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं के हिन्दी अध्यापकों के लिए 1 से 4 सप्ताह के लघु अवधीय नवीनकरण कार्यक्रमों का अयोजन करता है। जिसमें हिन्दी अध्यापकों को हिन्दी के वर्तमान परिवेश के अन्तर्गत भाषा शिक्षण की आधुनिक तकनीकी का

कार्यक्षेत्र आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, गोवा, महाराष्ट्र एवं केन्द्र शासित प्रदेश पांडिचेरी एवं अण्डमान निकोबार द्वीप समूह है। हैदराबाद केन्द्र पर हिन्दी शिक्षण पारंगत पाठ्यक्रम भी संचालित किया जाता है।

स्थापना :

1976 में दक्षिण भारत के प्रथम केन्द्र के रूप में हैदराबाद केन्द्र की स्थापना हुई थी। उस समय इसका कार्यक्षेत्र दक्षिण के राज्यों अर्थात् आंन्ध्रपदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक और केरल के साथ–साथ गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, दमन तथा द्वीव, पाण्डिचेरी, अंदमान निकोबार तथा लक्ष्यद्वीप था, दायित्व मैसूर केन्द्र को सौंप दिया गया। गुजरात, दमन तथा द्वीव के कार्यक्रम पहले मुख्यालय के द्वारा तथा अब अहमदाबाद केन्द्र के द्वारा संचालित हो रहे हैं। इस प्रकार वर्तमान में हैदराबाद केन्द्र के कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, गोवा, पाण्डिचेरी तथा अण्डमान निकोबार आते हैं। हैदराबाद केन्द्र में प्राथमिक मिडिल, माध्यमिक और महाविद्यालयों के हिन्दी अध्यापकों के लिये लघु अवधि के नवीकरण पाठ्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। केन्द्र के कार्यक्षेत्र में आने वाले राज्यों में और केन्द्र सरकार की स्वैच्छिक संस्थाओं नवोदय विद्यालयों, केन्द्रीय विद्यालयों और आश्रम पाठशालाओं चिन्मय विद्यालय तथा हैदराबाद हिन्दी प्रचार सभा दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा आदि स्वैच्छिक संस्थाओं के प्राथमिक से लेकर उच्च स्तर तक के हिन्दी शिक्षकों के लिये नवीकरण पाठ्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। साथ ही इस केन्द्र द्वारा प्रयोजन मूलक पाठ्यक्रम जैसे रेलवे विभाग, डाक विभाग, वित्त विभाग आदि केन्द्र सरकार की संस्थाओं के कर्मचारियों के लिये पाठ्यक्रमों का आयोजन किया जाता रहा है।

उद्देश्य :

राज्य में सेवारत हिन्दी शिक्षकों के लिये लघु अवधि नवीकरण कार्यक्रम आयोजित किये जाते है। इन नवीकरण कार्यक्रमों के माध्यम से हिन्दी की प्रयोग के प्रति सतत् जागरूकता रखने का प्रयास रखने का प्रयास किया जाता है।

अब तक पूर्णकालिक क्षेत्रीय निदेशक

1.	डॉ. वी.आर. जगन्नाथन	प्रोफेसर	01.07.1976 से 01.05.1981
2.	डॉ. सीताराम शास्त्री	रीडर	02.05.1981 से 08.08.1983
3.	डॉ. वी.आर. जगन्नाथन	प्रोफेसर	09.08.1983 से 30.09.1987
4.	डॉ. कृष्ण कुमार शर्मा	प्रोफेसर	09.03.1988 से 30.08.1991
5.	डॉ. मा. गोविन्द चतुर्वेदी	प्रोफेसर	05.09.1991 से 30.06.1994
6.	डॉ. पी. विजयराघव रेड्डी	रीडर	01.07.1994 से 30.06.1998
7.	प्रो. धर्मपाल गांधी	प्रोफेसर	01.07.1998 से 31.07.2001
8.	प्रो. टी.के. नारायण पिल्लै	प्रोफेसर	16.07.2001 से 31.07.2010
9.	प्रो. वाई. शाकुन्तलम्मा	प्रोफेसर	01.08.2010 से अब तक

कार्यक्षेत्र :

आन्ध्रपदेश, तमिलनाडु, गोवा, महाराष्ट्र राज्य के साथ ही साथ केन्द्रशासित प्रदेश पाण्डिचेरी तथा अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह। (Webliography-2)

4.2.3 मैसूर केन्द्र :

मैसूर केन्द्र की स्थापना वर्ष 1988 में हुई। केन्द्र का प्रमुख कार्य हिन्दी का शिक्षण–प्रशिक्षण एवं हिन्दी का प्रचार–प्रसार करना है। मैसूर केन्द्र हिन्दी के शिक्षण–प्रशिक्षण के अन्तर्गत प्राइमरी, हाइस्कूल, इण्टरमीडिएट के हिन्दी शिक्षकों के लिए हिन्दी शिक्षण की आधुनिक तकनीकों का व्यावहारिक ज्ञान कराने के लिए 3–4 सप्ताह के लघु अवधीय नवीकरण पाठ्यक्रमों का आयोजन तथा विश्वविद्यालय और महाविद्यालय के हिन्दी अध्यापकों के लिए 2 सप्ताह के प्रयोजनमूलक पाठ्यक्रमों का संचालन करता है।

केन्द्र द्वारा प्रचार–प्रसार के अन्तर्गत सरकारी अधिकारियों, अनुवादकों और वैज्ञानिकों के लिए 1 सप्ताह के राजभाषा अनुवादक एवं तकनीकी पाठ्यक्रम भी चलाये जाते हैं। केन्द्र का कार्यक्षेत्र पहले केवल कर्नाटक राज्य था। 1992 से इसके कार्यक्षेत्र में कर्नाटक राज्य के साथ केरल और केन्द्रशासित प्रदेश लक्षद्वीप भी शामिल कर दिए गए हैं।

स्थापना :

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान का मैसूर केन्द्र 1988 में प्रारम्भ किया गया। इसके अन्तर्गत केरल, कर्नाटक राज्य तथा लक्ष्यद्वीप आते हैं।

उद्देश्य :

राज्य में सेवारत हिन्दी शिक्षकों के लिये लघुअवधीय नवीकरण कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। इन नवीकरण कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षकों को भाषाशिक्षण की नवीन प्रविधियों से परिचित कराया जाता है तथा मानक हिन्दी प्रयोग के प्रति उनमें सतत् जागरूकता बनाये रखने का प्रयास किया जाता है। (Webliography-3)

अब तक पूर्णकालिक क्षेत्रीय निदेशक

1.	डॉ. लक्ष्मी नारायण शर्मा	1988–1991
2.	डॉ. अरूण चतुर्वेदी	1991–1992
3.	डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी	1992–1996
4.	डॉ. राजकमल पाण्डेय	1996–2001
5.	डॉ. रामवीर सिंह	2001–2003
6.	डॉ. शाकुन्तलम्मा रेड्डी	2003–2005
7.	डॉ. एम. ज्ञानम	2005–2013
8.	प्रो. सुशीला थॉमस	2013–2015

9.	डॉ. राजवीर सिंह	
10.	डॉ. राम निवास साहू	

4.2.4 दीमापुर केन्द्र :

इस केन्द्र की स्थापना वर्ष 2003 में हुई। दीमापुर केन्द्र को पूर्णसत्रीय पाठ्यक्रम के अन्तर्गत हिन्दी शिक्षण प्रवीण व हिन्दी शिक्षण विशेष गहन पाठ्यक्रमों के संचालन एवं मणिपुर व नागालैण्ड राज्य के हिन्दी अध्यापकों के लिये नवीकरण कार्यक्रमों के संचालन का उत्तरदायित्व सौंपा गया है। इस केन्द्र का कार्यक्षेत्र नागालैण्ड एवं मणिपुर राज्य हैं।

स्थापना :

नागालैण्ड सरकार की मांग पर 1 अगस्त 2003 को दीपापुर केन्द्र की स्थापना की गई थी। इस केन्द्र के सुचारू संचालन हेतु नागालैण्ड की सरकार ने अपने दो भवन निःशुल्क प्रदान किये।

उद्देश्य :

राज्य में सेवारत हिन्दी शिक्षकों के लिये लघुअवधीय नवीकरण कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। इन नवीकरण कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षकों को भाषा शिक्षण की नवीन प्रविधियों से परिचित कराया जाता है तथा मानक हिन्दी के प्रति उनमें सतत् जागरूकता बनाये रखने का प्रयास किया जाता है। दीमापुर केन्द्र को पूर्ण सत्रीय नियमित पाठ्यक्रम के अन्तर्गत हिन्दी शिक्षण प्रवीण एवं विशेष–गहन हिन्दी शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन तथा मणिपुर, नागालैण्ड राज्य के हिन्दी अध्यापकों के अवीकरण कार्यक्रमों का उत्तरदायित्व सौंपा। (Webliography-4)

अब तक पूर्णकालिक क्षेत्रीय निदेशक :

1.	डॉ. भरत सिंह पमार	रीडर	01.08.2003–02.08.2004
2.	डॉ. रवि प्रकाश गुप्त	प्रोफेसर	03.08.2004–28.04.2006
3.	श्री बिजेन्द्र सिंह	प्रवक्ता	29.04.2006–03.08.2007
4.	श्री चन्द्रकान्त कोठे	प्रवक्ता	04.08.2007–28.09.2009
5.	डॉ. परमलाल अहिरवार	प्रोफेसर	29.09.2009–2012
6.	डॉ. रामनिवास साहू	रीडर	2012–2015
7.	डॉ. भगत सिंह पमार	रीडर	2015–अब तक

4.2.5 भुवनेश्वर केन्द्र :

भुवनेश्वर केन्द्र उड़ीसा सरकार द्वारा आवन्टित यूनिट–9 सरकारी बालक उच्च विद्यालय, भुवनेश्वर परिसर के तीन कमरों में चलाया जा रहा है। इसका कार्यक्षेत्र उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़ तथा झारखण्ड हैं केन्द्र के कार्यक्षेत्र में आने वाले राज्यों के हिन्दी शिक्षकों तथा प्रचारकों के लिये एवं अन्य स्वैच्छिक संस्थाओं के प्राथमिक से लेकर उच्च स्तर तक के हिन्दी शिक्षकों के लिये नवीकरण पाठ्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इन नवीकरण कार्यक्रमों के माध्यम से हिन्दी शिक्षकों को भाषा शिक्षण की नवीन प्राविधियों से परिचित कराया जाता है।

स्थापना :

भुवनेश्वर केन्द्र की स्थापना वर्ष 2003 में हुई थी। इस केन्द्र के कार्यक्षेत्र हैं–उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़ तथा झारखण्ड राज्य।

उद्‌देश्य :

राज्य में सेवारत हिन्दी शिक्षकों के लिये लघु–अवधीय नवीकरण कार्यक्रम आयोजित

किये जाते हैं। इन नवीकरण कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षकों को भाषा शिक्षण की नवीन प्रविधियों से परिचित कराया जाता है तथा मानक हिन्दी के प्रयोग के प्रति उनमें सतत् जागरूकता बनाये रखने का प्रयास किया जाता है। (Webliography-5)

अब तक पूर्णकालिक क्षेत्रीय निदेशक :

1.	प्रो. राजकमल पाण्डेय	2003–2007
2.	डॉ. गंगाधर वानोडे	06.03.2007–2012

4.2.6 अहमदाबाद केन्द्र :

देश के अहिन्दी भाषी राज्यों में अप्रशिक्षित क्षेत्र हिन्दी अध्यापक पूरे वर्ष के लिये संस्थान या उससे सम्बद्ध अथवा समकक्ष प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षण के लिये नहीं आ सकते। इसी उद्देश्य से संस्थान अहमदाबाद केन्द्र की स्थापना की। इस केन्द्र द्वारा प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के हिन्दी शिक्षकों के लिये नवीन पाठ्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

स्थापना :

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की बृहद योजनाओं के अन्तर्गत अन्य केन्द्रों दीमापुर 2000, भुवनेश्वर 2003 के साथ 31 मार्च 2006 को अहमदाबाद केन्द्र की स्थापना हुई थी। एक लम्बी अवधि से संस्थान यह महसूस कर रहा था कि गुजरात राज्य के विभिन्न स्कूलों एवं कॉलेजों में कार्यरत हिन्दी अध्यापक प्रशिक्षण से वंचित हो रहे हैं इसी काम को पूरा करने के उद्देश्य से संस्थान ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुये अहमदाबाद केन्द्र की स्थापना हुई इस केन्द्र की स्थापना 2006 से पूर्व गुजरात, दमन तथा द्वीप क्षेत्र हैदराबाद केन्द्र के साथ सम्बद्ध थे। कुछ समय तक इस केन्द्र के कार्यक्रम मुख्यालय द्वारा भी संचालित हुये हैं।

उद्देश्य :

राज्य में सेवारत हिन्दी शिक्षकों के लिये लघु अवधि नवीकरण कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं इन नवीकरण कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षकों को भाषा शिक्षक की नवीन प्रविधियों से परिचित कराया जाता है। तथा उन्हें मानक हिन्दी के प्रयोग के प्रति सतत् जागरूक रखने का प्रयास किया जाता है। (Webliography-6)

अब तक पूर्णकालिक क्षेत्रीय निदेशक :

1. प्रो. रामकमल पाण्डेय
2. डॉ. हेमराज मीणा
3. प्रो. मीरा सरीन
4. डॉ. योगेन्द्र कुमार
5. डॉ. चन्द्रकान्त कोठे
6. डॉ. सुनील कुमार

भारत सरकार ने **'मण्डल'** के गठन के समय जो प्रमुख कार्य निर्धारित किये थे उन्हें तब से आज तक सतत् कार्य निष्ठा से सम्पन्न किया जा रहा है।

मण्डल के प्रमुख कार्य :

केन्द्रीय हिन्दी शिक्षण मण्डल के निर्धारित प्रमुख कार्य हैं–

i- हिन्दी भाषा के शिक्षकों को प्रशिक्षित करना।

ii- हिन्दीतर प्रदेशों के हिन्दी अध्ययन कर्ताओं की समस्याओं को दूर करना।

iii- हिन्दी शिक्षण में अनुसंधान के लिए अधिक सुविधाएं उपलब्ध करवाना।

iv- उच्चतर हिन्दी भाषा, साहित्य और अन्य भारतीय भाषाओं के साथ हिन्दी का तुलनात्मक भाषाशास्त्रीय अध्ययन और सुविधाओं को उपलब्ध करवाना।

v- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 के दिशा निर्देशों के अनुसार हिंदी भाषा के

अखिल भारतीय स्वरूप का विकास कराना और दिशा निर्देशों के अनुसार हिन्दी को अखिल भारतीय भाषा के रूप में विकसित करने का कार्य करना।

4.3 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय :

नई दिल्ली स्थित एक सरकारी विभाग है, जो भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के आधीन है और मानक हिन्दी के प्रसार के लिये उत्तरदायी है। यह देवनागरी लिपि के उपयोग और हिन्दी वर्तनी का विनयामन भी करता है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के जिलये दिये गए निर्देश को ध्यान में रखते हुए 1 मार्च 1960 को केन्द्रीय हिन्दी निदेशाालय की स्थापना की गई थी। इसके चार क्षेत्रीय कार्यालय हैं जो चेन्नई, हैदराबाद, गुवाहाटी और कोलकाता में स्थित है।

स्थापना	–	मार्च 1, 1960 : 57 वर्ष पहले
प्रकार	–	सरकारी संस्था
वैधानिक स्थिति	–	सक्रिय
मुख्यालय	–	नई दिल्ली, भारत
आधिकारिक भाषा	–	हिन्दी
जालस्थल	–	hindinideshalaya.nic.in

कार्य :

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के कार्यों में हिन्दी भाषा के कोशों का संकलन करना और उसका प्रकाशन करना, निःशुल्क हिन्दी पुस्तक वितरण करना और देवनागरी लिपि एवं हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण करना है। इसके अलावा यह पुस्तक की प्रदर्शनी आयोजित कर उसकी बिक्री करना तथा भाषा का वार्षिक रूप से साहित्य माला का संकलन और प्रकाशन का कार्य शामिल है।

हिन्दी को अखिल भारतीय स्परूप प्रदान करने, हिन्दी भाषा के माध्यम से जन–जन को जोड़ो और हिन्दी को वैश्विक धरातल पर स्थापित करने के लिए निंरतर प्रयासरत् हिंदी की यह शीर्शस्थ सरकारी संस्था निम्नलिखित महत्वपूर्ण योजनाओं को कार्यान्वित कर रही है। (Webliography-7)

1. हिन्दी पत्राचार पाठ्यक्रम योजना
2. कोश–निर्णाण योजना
3. विस्तार कार्यक्रम योजनाएं
4. 'भाषा' 'वार्षिकी' तथा 'साहित्यमाला' के अन्तर्गत भारतीय साहित्य की विभिन्न विधाओं से सम्बन्धित प्रकाशन योजना
5. हिन्दी भाषी प्रान्तों में हिन्दी पुस्तकों का निःशुल्क वितरण
6. देवनागरी लिपि तथा वर्तनी का मानकीकरण
7. पुस्तक–प्रदर्शनी एवं बिक्री
8. हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं को वित्तीय सहायता।
9. हिन्दी में प्रकाशन हेतु सीमित वित्तीय सहायता तथा हिन्दी में प्रकाशित पुस्तक–खरीद योजना
10. पुरस्कार योजनाएं
11. हिन्दीतर भाषी हिंदी लेखक पुरस्कार
12. शिक्षा पुरस्कार

4.4 अखिल भारतीय हिन्दी संस्थान संघ दिल्ली

स्थापना :

4 अगस्त 1964 ई. को भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के प्रयत्न तथा हिन्दी प्रचार करने वाली परीक्षा मान्यता प्राप्त संस्थाओं के सहयोग से दिल्ली में इस संघ स्थापना की गई।

उद्देश्य :

- संविधान की धारा 351 के अनुसार हिन्दी के प्रचार और विकास के लिये राष्ट्रीय मंच की स्थापना करना।
- हिन्दी के प्रचार तथा विकास के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये भारत की विभिन्न स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं के कार्यों में समन्वय स्थापित करना।
- विभिन्न स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं द्वारा संचालित हिन्दी परीक्षाओं के स्तर में एकात्मकता स्थापित करना।
- भारत सरकार तथा राज्य सरकारों अथवा अन्य किसी संस्था द्वारा संघ को भेजे गए हिन्दी के प्रचार और विकास से सम्बन्धित किसी भी मामले पर सलाह और सहायता देना।

(Webliography-8)

4.5 महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय :

महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय भारत का एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय है विश्वविद्यालय की स्थापना भारत सरकार सन् 1996 में संसद द्वारा पारित एक अधिनियम द्वारा की थी। इस अधिनियम को भारत के राजपत्र में 8 जनवरी सन् 1997 को प्रकाशित किया गया। यह विश्वविद्यालय महाराष्ट्र के वर्धा में स्थित है।



आदर्श वाक्य	:	ज्ञान शान्ति मैत्री
स्थापित	:	1997
प्रकार	:	सार्वजनिक
मान्यता / सम्वद्धता	:	यू.जी.सी.
कुलाधिपति	:	प्रो. कपिल कपूर
कुलपति	:	प्रो. गिरीश्वर मित्र
अवस्थिति	:	वर्धा महाराष्ट्र भारत
परिसर	:	ग्रामीण

जालपृष्ठ : WWW.hindivishwa.org

महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय विष्वविद्यालय भारत का एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय की स्थापना भारत सरकार ने सन् 1996 में संसद द्वारा पारित एक अधिनियम द्वारा की थी। इस अधिनियम को भारत के राजपत्र में 8 जनवरी सन् 1997 को प्रकाशित किया गया। यह विश्वविद्यालय महाराष्ट्र के वर्धा में स्थित है।

गांधी जी हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं के प्रबल पक्षधर थे। इसलिये इस विश्वविद्यालय का नाम उनके नाम पर रखना सर्वथा सार्थक है। वर्धा भारत के केन्द्र में स्थित होने के कारण इस विश्वविद्यालय के लिये यह स्थान सर्वथा उपयुक्त है।

प्रारम्भ में इसके 8 विद्यापीठ अधिकल्पित किये गये जिसके नाम इस प्रकार हैं–

- साहित्य विद्यापीठ
- भाषा विद्यापीठ
- संस्कृत विद्यापीठ
- अनुवाद तथा व्याख्या विद्यापीठ
- मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

- सृजन विद्यापीठ
- प्रबन्ध विद्यापीठ
- शिक्षा विद्यापीठ

स्थापना :

शान्ति, अहिंसा, सत्याग्रह, खादी, चरखा, स्वराज और जनता के हित के लिजये आत्मबल का सन्देश देने वाले महात्मा गांधी हिन्दी के भी उतने ही बड़े हिमायती थे। वे मानते थे कि आजादी की लड़ाई में हिन्दी का उपयोग एक निर्णायक हथियार के रूप में किया जा सकता है। उन्होंने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की स्थापना की थी। इन दोनों संस्थाओं ने अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी में से एक राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के प्रयासों से 1975 में नागपुर में हुए पहले विश्व हिन्दी सम्मेलन में स्वीकृत एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव के अनुरूप 1997 में भारत की संसद में पारित एक विशेष अधिनियम के तहत वर्धा में अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही भारतेन्दु की अधूरी आकांक्षा भी पूरी हुई। भारतेन्दु की संचित अभिलाषा भी 'अपने उद्योग से मैं एक शुद्ध हिन्दी यूनिवर्सिटी स्थापित करना।' गांधी जी के नाम पर भारत के बीचों–बीच स्थित वर्धा में पाँच टीलों पर यह अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय बना।

उद्देश्य :

1. हिन्दी भाषा और साहित्य का संवर्धन और विकास करना और उस प्रयोजन के लिये विद्या की सुसंगत शाखाओं में शिक्षण और अनुसन्धान की सुविधाएं प्रदान करना।

2. हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में तुलनात्मक अध्ययन और अनुसन्धान के सक्रिय अनुसरण के लिये व्यवस्था करना।

3. देश और विदेश में सुसंगत सूचना के विकास और प्रसारण के लिए सुविधाएं प्रदान करना।

4. दूर शिक्षा पद्धति के माध्यम से हिन्दी को लोकप्रिय बनाना।

5. विश्वविद्यालय की परिकल्पना शिक्षा की एक वैकल्पिक संस्था के रूप में की गई है। यह सतत् विचार प्रक्रिया का परिणाम जिसमें अपने उद्देश्यों को पाने के लिए शैक्षणिक तकनीकों में निरन्तर नवीनीकरण एवं मूल्यानुरूप नीतियों के लिये अनवरत प्रयास करना शामिल है। यह विश्वविद्यालय अपने ज्ञानात्मक आधारों में वैश्विविक एवं अपनी संरचना में अन्तर्राष्ट्रीय है।

6. वह विभिन्न ज्ञानानुशासनों में अद्यतन मौलिक सृजन तथा विश्व की अन्य भाषाओं में विद्यमान ज्ञान सम्पदा का अनुवाद हिन्दी भाषा में कर सकें।

दृष्टिकोण :

राष्ट्रीय नेताओं एवं हिन्दी प्रेमियों की यह एक उत्कृष्ट आकांक्षा रही है कि हिन्दी भारतीयों की भावनाओं एवं विचारों की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में संयुक्त राष्ट्रसंघ के अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर अपना समुचित स्थान ग्रहण करे। दूसरी ओर उनकी यह सोच भी थी कि न केवल विदेशों में अपितु समूचे विश्व में फैले हुये भारतीय मूल के व्यक्तियों के बीच भाषायी आदान–प्रदान के समन्वय हेतु हिन्दी का एक अन्तर्राष्ट्रीय सचिवालय स्थापित किया जाए। इसके अतिरिक्त उनकी यह भी कल्पना थी कि अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी की सम्पूर्ण सम्भावनाओं के विकास और सम्वर्धन के लिए एक केन्द्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना की जाए।

ध्येय :

क्षेत्रीय भाषा, राष्ट्रभाषा और अन्तराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी का सम्वर्धन और विकास।

कार्यलक्ष्य :

- ❖ हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दिलाना।
- ❖ राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी संगठन मे सम्पर्क सूत्र की भूमिका के निर्वाह के लिये

नेटवर्क संयोजन।

- ❖ भारतीय व अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी भाषाओं के साथ नेटवर्क संयोजन।
- ❖ भारतीय संस्कृति के सम्वाहिका के रूप में हिन्दी। (Webliography-9)

4.6 अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय :

अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय भोपाल में स्थित एक विश्वविद्यालय है। 6 जून 2013 में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने इसकी आधार शिला रखी।

यह विश्वविद्यालय तकनीकी चिकित्सा, कला और वाणिज्य से जुड़े विषयों की शिक्षा प्रदान करता है।



आदर्श वाक्य	:	न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिहि विद्यते
स्थापित	:	2011
प्रकार	:	सार्वजननिक विश्वविद्यालय
मान्यता	:	मध्यप्रदेश सरकार
कुलपति	:	प्रो. मोहनलाल छीपा
अवस्थिति	:	भोपाल, मध्यप्रदेश (भारत)

यह विश्वविद्यालय तकनीकी, चिकित्सा, कला और वाणिज्य से जुड़े विषयों की शिक्षा प्रदान करेगा।

मध्य प्रदेश और भारतवासियों के स्वभाषा और सुभाषा के माध्यम से ज्ञान की परम्परागत और आधुनिक विधाओं में शिक्षण–प्रशिक्षण की व्यवस्था और हिन्दी को गौरवपूर्ण स्थान दिलाने के लिये मध्य प्रदेश सरकार द्वारा इसकी स्थापना 19 दिसम्वर को की गयी भारत के पूर्व प्रधानमंत्री दिलाने के लिए मध्य प्रदेश सरकार द्वारा इसकी स्थापना 19 दिसम्वर 2011 को मध्य प्रदेश शासन ने इस विश्वविद्यालय की स्थापना की है। इस विश्वविद्यालय का उद्देश्य ऐसी युवा पीढ़ी का निर्माण करना है जो समग्र व्यक्तित्व विकास के साथ रोजगार कौशल और चारित्रिक दृष्टि से विश्वस्तरीय हो। विश्वविद्यालय ऐसी शैक्षिक व्यवस्था का सृजन करना चाहता है। जो भारतीय ज्ञान तथा आधुनिक ज्ञान में समन्वय करते हुए छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों में ऐसी सोंच विकसित कल्याण को प्राथमिकता दे। (Webliography-10)

पंचम् अध्याय

हिन्दी शिक्षण के आधुनिक आयाम

5.1 हिन्दी ब्लॉग्स :

इण्टरनेट पर हिन्दी से सम्बन्धित विभिन्न ब्लॉग्स उपलब्ध हैं। जिसकी मदद से शिक्षार्थी अपनी भिन्न समस्याओं का हल प्राप्त करते हैं। इसमें से कुछ महत्वपूर्ण हिन्दी Blogs का विवरण निम्नलिखित है–

क्रमांक	विवरण
1.	Achhikhabar.com पूरे हिन्दुस्तान में सबसे ज्यादा पढ़ा जाने वाला हिन्दी ब्लॉग है, साल 2015 में 3 करोड़ पेज के साथ एक नया रिकार्ड बना है। इस वेबसाइट पर, इस ब्लॉग अच्छी खबर की शुरूआत गोपाल मिश्रा सर ने 29 अक्टूबर 2010 में Blogspot की शुरूआत की। हिन्दी सुविचार हिन्दी कहानी के कलेक्शन हैं।
2.	Snakes.Sceintificworld.in इस हिन्दी ब्लॉग में डॉ. अरविन्द मिश्र और डॉ. जाकिर अली रजनीश ने एक बेहतरीन अभियान छेड़ा है। सांपों (सर्प) से जुड़े हर अफवाहों हर अन्धविश्वास को दूर करने के लिए अगर आप इस मुहिम से जुड़ना चाहते हैं। तो जरूर Snakes.Sceintificworld.in में सम्पर्क करें।
3.	Nuktachini.debashish.com पूना शहर के रहने वाले श्रीदेवाशीष चक्रवती जी ने इस ब्लॉग की शुरूआत लगभग 10 साल पहले की थी, जिसमें इन्होंने हिन्दी में विभिन्न बातें बतायी है। इनका सॉफ्टवेयर से सम्बन्धित कार्य हैं।

4.	Jankipul.com जानकिपुल एक हिन्दी साहित्य पत्रिका है, जो Gogle Blogger की सर्विस में है।
5.	Poetry.vinayprajapati.com दोस्तों ये ब्लॉग नाम से ही पता चल जाता है, की इस ब्लॉग में कुछ कविता, कहानी होगें इस वेबसाइट का जो स्लोगन है। तखलीक–ए–नजर इसमें काफी अच्छे–अच्छे कहानी पोस्ट किये हुये हैं।
6.	Hamarisafalta.com हमारी सफलता एक प्रेरणादायक हिन्दी ब्लॉग है। जो लोगो में नकारात्मक बातें दिमाग में आती हैं उन सभी को दूर करने के लिये किरन साहू जी ने ये ब्लॉग की शुरूआत की एक अच्छे उपदेशक के रूप में शुरू की।
7.	Hindisoch.com हिन्दी सोच नाम से ही पता चलता है की इसमें एक हिन्दी भाषासे जुड़ी अच्छी बातें जुड़ी हैं, इस ब्लॉग की शुरूआत पवन कुमार जी ने की है।
8.	Hindimehelp.com हिन्दी में सहायता ब्लॉग रोहित मेवाडा सर जी ने बनायी जो एक बेहद पापुलर हिन्दी ब्लॉग है। हिन्दी में हेल्प ब्लॉग में रोहित जी ने काफी आसान शब्दों में समझाने की कोशिश की है। इस ब्लॉग में कम्प्यूटर से सम्बन्धित और ब्लॉग से सम्बन्धित काफी अच्छी जानकारी मिलेगी।
9.	Supportmeindia.com यह ऐसी वेबसाइट और ब्लॉग है जिसके बारे में जितनालिखा जाए कम ही है। क्योंकि इस ब्लॉग से काफी कम समय में काफी ज्यादा लोगों ने सीखा है, इस ब्लॉग की शुरूआत जुमेदीन खान जी ने एक साल पहले की थी। आज सपोर्ट मी इण्डिया एक फेमस ब्लॉग है। इस ब्लॉग में Blogging and S.E.O. से सम्बन्धित आपको सभी जानकारी मिलेगी।

10.	Aapkisafalta.com अमूल शर्मा जी ने लोगों को सफलता के रास्ते दिखाने के लिये लोगों में एक प्रेरणादायक बाते जगाने के लिये एक अच्छी सोच के साथ इसकी शुरूआत की।

(Webliography-11)

5.2 हिन्दी वेबसाइट :

हिन्दी की बहुत सी महत्वपूर्ण वेबसाइट इण्टरनेट पर उपलब्ध हैं, जिससे विद्यार्थियों अपने विषय के प्रकरणों को समझने में मदद मिलती है। हिन्दी की महत्वपूर्ण वेबसाइटों का विवरण महत्वपूर्ण है।

Sr. No.	Description
1-	Sapport me India Www.Supportmeindia.com
2-	Hindi me help Www.hindimehelp.com
3-	Reehinditrick Www.reehinditrick.in
4-	All help in hindi me Www.allhelpinhindime.com
5-	Successveda Www.successveda.com
6-	All online help Www.Allonlinehelp.com
7-	Tech in help Www.techinhelp.com

8-	Heo gyaan Www.neogyaan.com
9-	Kaise hoga Www.keisehoga.tk
10-	Blogger tips guide Www.bloggertipsguide.com
11-	All hindi help Www.Allhindihelp.com
12-	Hindi helpz Www.hindihelpz.com

(Webliography-12)

5.3 हिन्दी सर्च इंजन

हिन्दी सामग्री खोजने के लिये आप गूगल में हिन्दी में टाइप करें, गूगल के अलावा आप आगे दिये गए सर्च इंजन भी प्रयोग में ला सकते हैं।

1. यह सर्च इंजन हिन्दी इंटरनेट के खजाने की कुंजी है। इसके द्वारा आप इंटरनेट पर उपलब्ध प्रत्यके हिन्दी वेब पेज को खोज सकते हैं।

2. आप गूगल से भी हिन्दी वेब पेज खोज सकते हैं।

3. http://www.hindi.co.in

4. http://www.hindikeyboord.indiapress.org

संसार के सबसे उत्तम सर्च इंजन

❖ **गूगल डॉट कॉम**

गूगल डॉट कॉम डॉमेन नेम 15 सितम्बर 1997 में रजिस्टर हुआ था। दुनियां में यह सबसे पॉपुलर सर्च इंजन है। लैरी पेज और सेर्गे ब्रिन द्वारा स्थापित किया गया है।, वे

स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में पी.एच.डी. के छात्र थे। अब ये अमेरिकी मल्टीनेशनल टेक्नोलॉजी कम्पनी है।

- ❖ **विंग डॉट कॉम** : बिंग डॉट कॉम दूसरा पॉपुलर सर्च इंजन है इसे माइक्रोसाफ्ट ने आपरेट किया है। ये कई चीजें सर्च की सुविधा देता है।

  ये अमेरिकी साफ्टवेयर कम्पनी माइक्रोसॉफ्ट कॉरपोरेशन ने 2009 में लॉन्च हुआ था।

- ❖ **याहू डॉट कॉम** : इस सर्च इंजन को 1994 में स्थापित किया गया था। ये तीसरा ऐसा सर्च इंजन है जो पॉपुलर है। करीब 800 मिलियन लोग इस सर्च इंजन पर हर महीने विजिट करते हैं।

- ❖ **आस्कडॉट** : आस्क डॉट को आस्क जीव्स के नाम से जाना जाता है। इस सर्च इंजन को 1996 में शुरू किया गया था। इस इंजन पर दुनिया के 150 मिलियन लोग हर महीने विजिट करते हैं।

- ❖ **वाह** : वाह एक ऑनलाइन सेवा है जो वर्ष 1996 में Compuserve.com द्वारा चलाया जाता था।

- ❖ **डकडकगो** : डकडकगों सातवां सबसे पॉपुलर सर्च इंजन है कम्पनी का नाम बच्चों की गेम डकडकगों से निकला गया नाम है। (Webliography-13)

5.3.1 रफ्तार :

रफ्तार दुनिया का पहला हिन्दी वेब पोर्टल है। आज रफ्तार एक वेब सर्च पोर्टल से आगे बढ़कर दुनिया के सबसे बड़े हिन्दी कंटेट को विभिन्न श्रेणियों जैसे–मनोरंजन, समाचार, ज्योतिष शब्दकोष आदि के रूप में बांटकर यूजर्स को बेहतरीन सर्च रिजल्ट देने के की दिशा में कार्यरत है।

paftaar.hindi.search Engine india – रफ्तार हिन्दी सर्च इंजन (हिन्दी) खोज यंत्र – भारत Raftaar news search.hotest hindi news.pashiphal

हिन्दी न्यूज समाचार राशिफल Raftaar image search fhoto GHallery

(Webliography-14)

5.4 हिन्दी सॉफ्टवेयर

सॉफ्टवेयर प्रोग्रामिंग भाषा द्वारा लिखे गये निर्देशों की श्रृंखला है, जिसके अनुसार दिए गये डेटा का प्रोसेस होता है। बिना सॉफ्टवेयर के कम्प्यूटर कोई भी कार्य नहीं कर सकता है। इसका प्राथमिक उद्देश्य डाटा को सूचना में परिवर्तित करना है, साफ्टवेयर के निर्देशों के अनुसार ही हार्डवेयर भी कार्य करता है। इसे प्रोग्राम भी कहते है।

हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर के बीच संचार स्थापित करने को इंटरफेस कहते है।

सभी सॉफ्टवेयर लाइसंस के माध्यम से संरक्षित तथा प्रतिवेधित रहते हैं। सॉफ्टवेयर लाइसेंस सॉफ्टवेयर के निर्माता तथा उपयोगकर्ता की बीच कानूनी कानूनी एग्रीमेंट है। जिसके अन्तर्गतर एक से अधिक कम्प्यूटर पर सॉफ्टवेयर को ईस्टॉल करना कोड में किसी तरह का रूपान्तरण और सॉफ्टवेयर में किसी तरह का बदलाव करना निषेध है। यह सॉफ्टवेयर के उपयोग को प्रतिबंधित करता है।

विज्ञान के आज सभी जगह प्रगति दर्ज की है। कम्प्यूटर के आगमन से कार्यलयीन कामकाज में बड़ी सहायता प्राप्त हुई है। भारत में कम्प्यूटर के आगमन के साथ हिंदी भाषा भी तेजी से बढ़ने लगी। सी. डैक पुणे ने कुछ बेहतरीन सॉफ्टवेयर विकसित किये जिससे कम्प्यूटर पर भारतीय भाषाओं का प्रयोग होने लगा। लेकिन हिंन्दी के सॉफ्टवेयर काफी महगें थे। हर कार्यालय की अपनी वित्तीय सीमा होती है। शुरूआती दौर में कम्प्यूटर की कीमत में सॉफ्टवेयर अब सस्ते में प्राप्त हो रहे हैं। विश्वस्तर पर भाषाओं के विकास में कम्प्यूटर ने अहम भूमिका निभाई है। अंग्रेजी भाषा के फॉट यूनिकोड में परिवर्तित हुए हैं। अनेक सॉफ्टवेयर मुक्त में वितरित हो रहे हैं। कम्प्यूटर की दुनिया में शेरवेअर, प्रिवेअर सॉफ्टवेयरों का बोलबाला है। इस बदलते परिवेश में हम कितने दिनों तक विदेशों का मुंह ताकते रहेगें। भारत सरकार ने भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी का विकास किया है।

सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार मंत्रालय ने www.iidc.gov.in वेब साईट जारी की है। इस साईट पर भारतीय भाषाओं के सॉफ्टवेयर इंटरनेट के माध्यम से मुक्त डाउनलोड किये जा सकते है।

मुक्त साफ्टवेयर डाउनलोड करने से पहले आपका नाम पंजीकरण किया जाता है। पंजीकरण के बाद प्रयोगकर्ता का नाम और पासवर्ड दिया जाता है। इसके बाद आपकी कम्यूटर की आवश्यकताओं के अनुसार आप सम्बन्धित सॉफ्टवेयर डाउनलोड कर सकते है। कृपया ध्यान रखें कि डाउनलोड करने से पहले आपके कम्प्यूटर पर डी.ए.पी. (डाउनलोड सक्सलेंटर प्रोटोकॉल) अथवा फ्लागेट सॉफ्टवेयर को इंटरनेट स्थापित किया गया है। किसी सॉफ्टवेयर को इंटरनेट पर डाउनलोड करने में यह सॉफ्टवेयर मदद करता है। इससे कम समय में डाउनलोड प्रक्रिया तेजी से सम्पन्न होती है। पर निम्नलिखित सॉफ्टवेयर मुक्त डाउडलोड हेतु उपलब्ध है। (Webliography-15)

5.5 ई–बुक्स (**E-Books**) :

वह पुस्तकें जो कि विभिन्न विषयों से सम्बन्धित होती है तथा पुस्तक प्राप्ति की बेवसाइटों पर हर समय उपलब्ध होती है। उन पुस्तकों से छात्र अपनी आवश्यकता के अनुसार सामग्री एकत्रित कर सकता है इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि प्रत्येक छात्र को घर बैठे ही विभिन्न शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता हो जाती है। ई–बुक्स का प्रयोग विश्व का कोई भी छात्र कर सकता है।

इस सेवा में कुछ पुस्तकें भी उपलब्ध होती हैं जिनको डाउनलोड करने के लिए शुल्क देना होता है तथा कुछ पुस्तकों को निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है इसके माध्यम से छात्रों के ज्ञान में वृद्धि होती है तथा एक ही विषय पर विभिन्न विद्वानों के सुझाव व विचार ई–बुक्स के माध्यम से संकलित किए जा सकते हैं। इस प्रकार ई–बुक्स वर्तमान

समय में महत्वपूर्ण एवं आवश्यक सूचना स्रोत के रूप में कार्य कर रही है। इसके द्वारा छात्रों को शिक्षण सामग्री की उपलब्धता में सहयोग प्रदान करता है।

क्रम संख्या	किताब	लेखक
1.	उत्तर प्रदेष में गॉधी जी	श्री रामनाथ सुमन
2.	हिन्दी महाभारत	चतुर्वेदी द्वारिका प्रसाद शर्मा
3.	हिन्दी बहीखाता	कस्तूरमल भाटिया
4.	तुलसी नाटक	बद्रीनाथ भट्ट
5.	मुद्राराक्षस नाटक	शास्त्री श्री बल्देव
6.	निहार	महादेवी वर्मा
7.	विदेश यात्रा	पं. विशन यात्रा
8.	दरिद्र नारायण	पांचाल ओमकारनाथ
9.	गांवों की समस्याएं	प्रेमनारायण माथुर
10.	युद्ध और अहिंसा	महात्मागांधी

5.5.1 हिन्दी पुस्तकें :

तुलसीदास जी की रामचरित मानस :

i- बाल काण्ड

ii- अयोध्या काण्ड

iii- अरण्य काण्ड

iv- किसकिन्धा काण्ड

v- सुन्दरकाण्ड

vi- लंका काण्ड

vii- दोहावली

viii- कवितावली

ix- विनय पत्रिका

x- श्रीराम शलाका प्रश्नावली

xi- स्तुती

xii- सुन्दरकाण्ड

xiii- सुन्दर काण्ड–2

हिन्दी पुस्तकों को उसके लिंक पर सीधे क्लिक करके डाउनलोड करें।

- हिन्दी पुस्तकों : यहाँ खरीदें–hindi book by here
- फ्लिपकार्ट पर वेस्ट सेलर हिन्दी पुस्तकें

भजन और आरती की पुस्तकें :–

- आरतीय संग्रह
- हिन्दी भजन
- सन्त कबीर भजन

- सत्संग भजन
- वंशी की धूम
- अमृतवाणी
- दैनिक प्रार्थना
- दोहे
- हरि गीता

5.5.2 हिन्दी की पत्र–पत्रिकाओं के नाम :

"हिन्दी की सबसे पुरानी पत्रिका वीणा अब इंटरनेट पर भी पढ़ी जा सकेगी, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान पिछले दिनों वीणा की वेबसाईट का लोकार्पण किया, शायद आपको ये जानकर हैरानी होगी कि वीणा भारत की एकमात्र साहित्यिक पत्रिका है जो 1927 से निरन्तर प्रकाशित हो रही है।

हिन्दी की पत्रिकाओं के नाम

पत्रिका का नाम	संपादकीय सम्पर्क	वेब सम्पर्क
अर्गला	210 झेलम हॉस्टल, जवाहर लाल विश्वविद्यालय, नई दिल्ली–110067	Website
अहा जिंदगी	6 द्वारिका सदन प्रेस कॉम्पेल्स एम.पी. नगर, भोपाल –462011	Website
ओशो टाइम्स	ओशो इंटरनेशनल, 304, पार्क एवन्यू साउथ, स्वीट–608	Website
कथाक्रम	'स्वप्रिका डी–107, महानगर विस्तार, लखनऊ–226006	Website

कथाबिम्ब	ए–10 बसेरा, ऑफ दिन–क्वारी रोड देवनगर मुम्बई–400088	Website
कादम्बिनी	18–20 कस्तूरबा गांधी मार्ग नई दिल्ली–110001	Website
तद्रव	18/2017, इंदिरा नगर, लखनऊ	Website
नवनीत	भारतीय विद्या भवन, 20 म. मुशी रोड	Website
प्रभात पुंज	403, कृष्णा आंगन आर.एन.पी. पार्क भाईदर पूर्व मुम्बई–401105	
पारवी	बी.107 सेक्टर–63, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर–201303, उ.प्र.	Website
वया	सी.–56/यू.जी.एफ–49 शालीमार गार्डन एक्सटेंशन–2, गाजियाबाद–201005	Website
रंगवती	प्यारा केरकेहा फाउंडेशन, चैशायर होमरोड, बरियाटु, रांची–834003, झारखण्ड	Website
लमही	विजयराजय, 3/343, विवके खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ–226010 उ.प्र.	Website
वागर्थ	भारतीय भाषा परिषद 36 ए शेक्सपियर सारणी	Website
विशिष्ट ध्यान	विशिष्ट ध्यान योग आश्रम, 248 टेढ़ी बाजार, अयोध्या–224123 फैजाबाद, उ.प्र.	Website

शोध संचयन	409, शांतिवन, ए/244ए, आजाद नगर, कानपुर–208002	Website
हंस पत्रिका	2/36 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002	Website

(Webliography-17)

5.5.3 हिन्दी न्यूज चैनल–

नाम	टिप्पणी
सुदर्शन न्यूज	भारत का एकमात्र राष्ट्रवादी न्यूज चैनल।
PB Live News	निजी क्षेत्र में देश का हिन्दी समाचार चैनल।
आज तक	निजी क्षेत्र में देश का सबसे पुराना हिन्दी समाचार चैनल। टाइम रेटिंग में हमेशा सबसे ऊपर
ईटीवी	देश का सबसे बड़ा नेटवर्क वाला क्षेत्रीय चैनल समूह। बारह चैनलों के माध्यम से प्रसारण
डीडी न्यूज	सबसे पुराना सरकारी समाचार चैनल
आईबीएन–7	टीवी 18 समूह का समाचार चैनल।
खोज इंडिया	
इंडिया टीवी	हिन्दी समाचार चैनल
लाइव इण्डिया	
न्यूज 24	

सहारा समय	सहारा परिवार द्वारा संचालित हिन्दी न्यूज चैनल
एबीपी न्यूज	एबीपी ग्रुप का हिन्दी समाचार चैनल।

5.5.4 हिन्दी के महत्वपूर्ण समाचार पत्र :

क्र.सं.	समाचार पत्र/ऑनलाइन पोर्टल	वेबसाइट
1.	अमर उजाला	www.amarujala.com
2.	दैनिक भास्कर	www.bhaskar.com
3.	दैनिक जागरण	www.dainikjagaran.com
4.	हरि भूमि	www.haribhoomi.com
5.	हिंदी मिलाप	www.hindimilap.com
6.	नई दुनिया	www.naiduniya.com
7.	नव भारत टाइम्स	www.navabharat.com
8.	प्रभात खबर	www.prabhatkhabar.com
9.	राजस्थान पत्रिका	www.patrika.com
10.	रांची एक्सप्रेस	www.ranchiexpress.com

(Webliography-18)

5.6 हिन्दी वर्तनी जॉचक :

वर्तनी जॉचक या स्पैल ऐसा कम्प्यूटर प्रोग्राम है जो स्वयं या किसी अन्य प्रोग्राम से जुड़कर किसी भाषा में लिखे पाठ के शब्दों की वर्तनी की जांच करता है और जो शब्द गलत हों उनके किये शुद्ध वर्तनीवाले वैकल्पिक शब्द प्रस्तुत करता है।

हिन्दी के लिये सबसे पहले वर्तनी जॉचक माइक्रोसॉफ्ट ने ऑफिस 2003 में प्रस्तुत किया था। इसके गलत वर्तनी वाले शब्दों को अंग्रेजी की तरह हाइलाइट कर दिया जाता था ता सही शब्द सुझाया जाता था। माइक्रोसॉफ्ट के प्रूफिंग टूल हिन्दी वर्तनी जॉच के लिए सबसे लोकप्रिय है।

कई अन्य संस्थाओं तथा व्यक्तियों में भी बाजार में ऐसी कई सुविधाएं प्रस्तुत की जो हिन्दी लेखन की शुद्धता बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुए। डॉ0 अनुराग सीठा द्वारा विकसित माला शब्द शोधक हिन्दी का प्रथम ओपन सोर्स यूनिकोड वर्तनी परीक्षक तथा शोधक है जिसमें दो लाख से अधिक हिन्दी शब्दों का शब्दकोश है और यह स्टैंड अलोन युनिकोड शब्द संसाधक तथा फॉयरफॉक्स एक्सटेंशन के रूप में उपलब्ध है।

प्रमुख उपयोग :

वर्तनी जॉचकों का मुख्य उपयोग शब्द संसाधकों ई–मेल प्रोग्रामों, डेस्कटॉप प्रकाशन आदि में होता है। किन्तु इसके अलावा भी इसके बहुत से परोक्ष उपयोग है–

- ओ.सी.आर में वर्तनी जॉचक के उपयोग से अधिक शुद्धता प्राप्त होती है।
- वाक से पाठ करने वाले प्रोग्रामों के आउटपुट की शुद्धता वर्तनी जॉचकों के उपयोग के द्वारा वढ़ायी जा सकती है। (Webliography-16)

5.7 हिन्दी शब्दकोश :

शब्द को एक बड़ी सूची या ऐसा ग्रन्थ जिसमें की वर्तनी उनकी व्युत्पत्ति, व्याकरणनिर्देश, अर्थ परिभाषा प्रयोग और पदार्थ आदि का सन्निवेश हो। शब्दकोश एक भाषीय हो सकते है, द्विभाषिक हो सकते हैं या बहुभाषिक हो सकते हैं। अधिकतर शब्दकोशों में शब्दों के उच्चारण के लिये भी व्यवस्था होती है। जैसे अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक लिपि में, देवनागरी में या आडियो संचिका के रूप। कुछ शब्दकोशों में शब्दों का सहारा भी लिया जाता है। अलग–अलग कार्य क्षेत्रों के लिये अलग–अलग शब्दकोश हो सकते हैं। जैसे विज्ञान शब्दकोश चिकित्सा शब्दकोश, विधिक (कानूनी) शब्दकोश गणित का शब्दकोश

आदि।

सभ्यता एवं संस्कृति के उदय से ही मानव जान गया था कि भाव के सही संप्रेषण के लिए सही अभिव्यक्ति आवश्यकता है सही अभिव्यक्ति के के लिए सही शब्द का चयन आवश्यक है सही शब्द के चयन के लिये शब्दों के संकलन आवश्यक है शब्दों और भाषा के मानकरण की आवश्यकता समझ कर आंरभिक लिपियों के उदय से बहुत पहले ही आदमी ने शब्दों का लेखा–जोखा रखना शुरू कर दिया था। इसके लिये उसने कोश बनाना शुरू कर दिया था। इसके लिए उसने कोश बनाना शुरू किया।

5.7 हिन्दी शब्दकोश :

1. हिन्दी–हिन्दी शब्दकोश/अ
2. हिन्दी–हिन्दी शब्दकोश/आ
3. हिन्दी–हिन्दी शब्दकोश/शेष स्वर
4. हिन्दी–हिन्दी शब्दकोश/क
5. हिन्दी–हिन्दी शब्दकोश/ख
6. हिन्दी–हिन्दी शब्दकोश/च
7. हिन्दी–हिन्दी शब्दकोश/ज
8. हिन्दी–हिन्दी शब्दकोश/ट
9. हिन्दी–हिन्दी शब्दकोश/ड
10. हिन्दी–हिन्दी शब्दकोश/त
11. हिन्दी–हिन्दी शब्दकोश/द
12. हिन्दी–हिन्दी शब्दकोश/न
13. हिन्दी–हिन्दी शब्दकोश/प
14. हिन्दी–हिन्दी शब्दकोश/फ

15. हिन्दी–हिन्दी शब्दकोश/भ
16. हिन्दी–हिन्दी शब्दकोश/य
17. हिन्दी–हिन्दी शब्दकोश/व
18. हिन्दी–हिन्दी शब्दकोश/श
19. हिन्दी–हिन्दी शब्दकोश/स
20. हिन्दी–हिन्दी शब्दकोश/ह (Webliography-19)

5.8 हिन्दी अनुवादक :

अनुवाद सम्बन्धी सिद्धान्तों पर स्वतंत्र ग्रन्थों का लेखन वस्तुतः बीसवीं शताब्दी में प्रारम्भ हुआ। इसी शताब्दी के दौरान साहित्यिक और भाषा वैज्ञानिक पत्रिकाओं में अनुवाद पर लेखों का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इन्हीं भाषा वैज्ञानिक एवं साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं में अनुवाद की कई परिभाषाओं को जन्म दिया।

डॉउन स्टर्ट – "हमारे अर्थ विचार में भाषा का गुण है। किसी भी स्रोत भाषा के पाठ का अर्थ अपना होता है और लक्ष्य भाषा के पाठ का अर्थ भी अपना होता है।"

सम्मुअल जॉन्सन– "अनुवाद सूल भावों की रक्षा करते हुए उसे दूसरी भाषा में बदल देना है।"

पट्नायक– "अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा सार्थक अनुभव को एक भाषा समुदाय से दूसरे भाषा समुदाय में संप्रेषित किया जाता है।" (Webliography-20)

5.9 सोशल मीडिया :

सोशल मीडिया पारस्परिक संबन्ध के लिये अन्तर्जाल या अन्य माध्यमों द्वारा निर्मित आभाषी समूहों को संदर्भित करता है। यह व्यक्तियों और समुदायों के साझा, सहभागी बनाने का माध्यम है। इसका उपयोग सामाजिक संबन्ध के अलावा उपयोगकर्ता सामग्री के संशोधन के लिए उच्च पारस्परिक मंच बनाने के लिए मोबाइल और वेब आधारित प्रौद्योगिकियों के

प्रयोग के रूप में भी देखा जा सकता है।

स्वरूप :

सामाजिक मीडिया के कई रूप हैं जिनमें कि इंटरनेट फोरम वेबलॉग, सामाजिक ब्लाग, माइक्रोब्लागिग, विकीज सोशल नेटवर्क, पॉडकास्ट, फोटोग्राफ, चित्र–चलचित्र आदि सभी आते हैं। अपनी सेवाओं के अनुसार सोशल मीडिया के लिये कई संचार प्रोद्योगिकी उपलब्ध है।

i- सहयोगी परियोजना

ii- ब्लॉग और माइक्रोब्लॉग

iii- सोशल खबर नेटवर्किंग साइट्स

iv- सामग्री समुदाय (उदाहरण के लिए, यू–ट्यूब और डेली मोशन)

v- आभासी सामाजिक दुनिया

विशेषता :

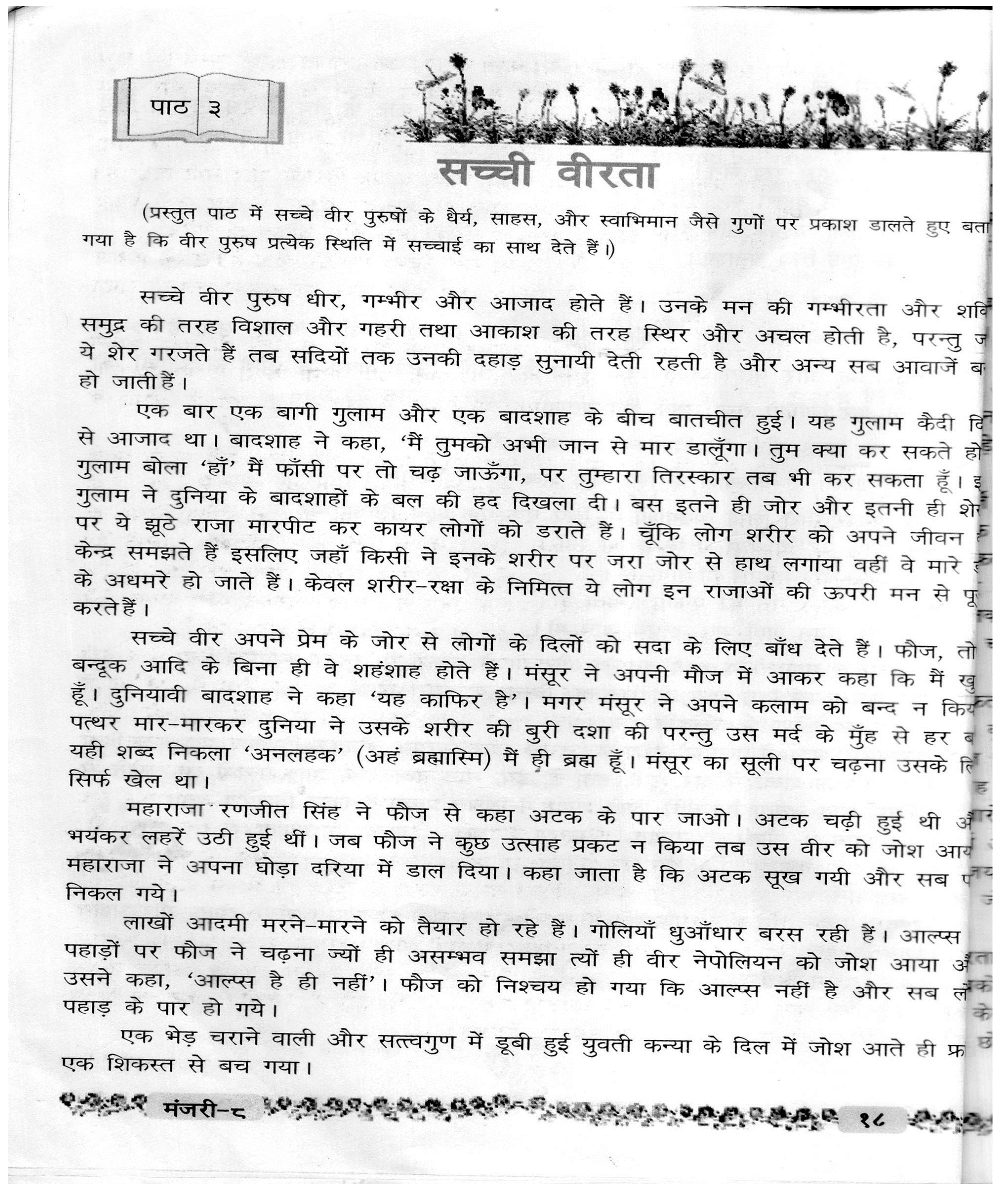
सामाजिक मीडिया अन्य पारम्परिक तथा सामाजिक तरीकों से कई प्रकार से एकदम अलग है। इसमें पहुँचकर, आवृत्ति, प्रयोज्य ताजगी और स्थायित्व आदि तत्व शामिल हैं।

षष्ठ अध्याय

हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन एवं समावेशन

6.1 हिन्दी की पाठ्यपुस्तक का आलोचनात्मक अध्ययन :

1. उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा द्वारा प्रमाणित हिन्दी की 'मंजरी' नामक पाठ्यपुस्तक कक्षा–8 का अध्ययन किया गया जिसमें निम्न कमियाँ पायी गयीं।
2. पाठ्यपुस्तक में चित्रों का अभाव है।



पाठ ३

सच्ची वीरता

(प्रस्तुत पाठ में सच्चे वीर पुरुषों के धैर्य, साहस, और स्वाभिमान जैसे गुणों पर प्रकाश डालते हुए बता
गया है कि वीर पुरुष प्रत्येक स्थिति में सच्चाई का साथ देते हैं।)

सच्चे वीर पुरुष धीर, गम्भीर और आजाद होते हैं। उनके मन की गम्भीरता और शवि
समुद्र की तरह विशाल और गहरी तथा आकाश की तरह स्थिर और अचल होती है, परन्तु ज
ये शेर गरजते हैं तब सदियों तक उनकी दहाड़ सुनायी देती रहती है और अन्य सब आवाजें ब
हो जाती हैं।

एक बार एक बागी गुलाम और एक बादशाह के बीच बातचीत हुई। यह गुलाम कैदी दि
से आजाद था। बादशाह ने कहा, 'मैं तुमको अभी जान से मार डालूँगा। तुम क्या कर सकते हो
गुलाम बोला 'हाँ' मैं फाँसी पर तो चढ़ जाऊँगा, पर तुम्हारा तिरस्कार तब भी कर सकता हूँ। इ
गुलाम ने दुनिया के बादशाहों के बल की हद दिखला दी। बस इतने ही जोर और इतनी ही शे
पर ये झूठे राजा मारपीट कर कायर लोगों को डराते हैं। चूँकि लोग शरीर को अपने जीवन
केन्द्र समझते हैं इसलिए जहाँ किसी ने इनके शरीर पर जरा जोर से हाथ लगाया वहीं वे मारे
के अधमरे हो जाते हैं। केवल शरीर–रक्षा के निमित्त ये लोग इन राजाओं की ऊपरी मन से पू
करते हैं।

सच्चे वीर अपने प्रेम के जोर से लोगों के दिलों को सदा के लिए बाँध देते हैं। फौज, तो
बन्दूक आदि के बिना ही वे शहंशाह होते हैं। मंसूर ने अपनी मौज में आकर कहा कि मैं खु
हूँ। दुनियावी बादशाह ने कहा 'यह काफिर है'। मगर मंसूर ने अपने कलाम को बन्द न किय
पत्थर मार–मारकर दुनिया ने उसके शरीर की बुरी दशा की परन्तु उस मर्द के मुँह से हर ब
यही शब्द निकला 'अनलहक' (अहं ब्रह्मास्मि) मैं ही ब्रह्म हूँ। मंसूर का सूली पर चढ़ना उसके लि
सिर्फ खेल था।

महाराजा रणजीत सिंह ने फौज से कहा अटक के पार जाओ। अटक चढ़ी हुई थी अ
भयंकर लहरें उठी हुई थीं। जब फौज ने कुछ उत्साह प्रकट न किया तब उस वीर को जोश आय
महाराजा ने अपना घोड़ा दरिया में डाल दिया। कहा जाता है कि अटक सूख गयी और सब प
निकल गये।

लाखों आदमी मरने–मारने को तैयार हो रहे हैं। गोलियाँ धुआँधार बरस रही हैं। आल्प्स
पहाड़ों पर फौज ने चढ़ना ज्यों ही असम्भव समझा त्यों ही वीर नेपोलियन को जोश आया अ
उसने कहा, 'आल्प्स है ही नहीं'। फौज को निश्चय हो गया कि आल्प्स नहीं है और सब लो
पहाड़ के पार हो गये।

एक भेड़ चराने वाली और सत्त्वगुण में डूबी हुई युवती कन्या के दिल में जोश आते ही फ्र
एक शिकस्त से बच गया।

मंजरी–८   १८

वीरता की अभिव्यक्ति कई प्रकार से होती है। कभी उसकी अभिव्यक्ति लड़ने मरने में, खून बहाने में, तलवार तोप के सामने जान गँवाने में होती है तो कभी जीवन के गूढ़ तत्त्व और सत्य की तलाश में बुद्ध जैसे राजा विरक्त होकर वीर हो जाते हैं। वीरता एक प्रकार की अन्तः प्रेरणा है। जब कभी इसका विकास हुआ तभी एक नया कमाल नजर आया। एक नयी रौनक, एक नया रंग, एक नयी बहार, एक नयी प्रभुता संसार में छा गयी। वीरता हमेशा निराली और नयी होती है। नयापन भी वीरता का एक खास रंग है। वीरता देश काल के अनुसार संसार में जब कभी प्रकट हुई तभी एक नया स्वरूप लेकर आयी, जिसके दर्शन करते ही सब लोग चकित हो गये।

वीर पुरुष का दिल सबका दिल हो जाता है। उसका मन सबका मन हो जाता है। उसके विचार सबके विचार हो जाते हैं। उसके संकल्प सबके संकल्प हो जाते हैं। उसका बल सबका बल हो जाता है। वह सबका और सब उसके हो जाते हैं।

वीरों को बनाने के कारखाने कायम नहीं हो सकते। वे तो देवदार के वृक्षों की तरह जीवन के अरण्य में खुद ब खुद पैदा होते हैं और बिना किसी के पानी दिये, बिना किसी के दूध पिलाये, बिना किसी के हाथ लगाये तैयार होते हैं और दुनिया के मैदान में अचानक ही सामने आकर वे खड़े हो जाते हैं।

हर बार दिखावा और नाम के लिए छाती ठोंककर आगे बढ़ना और फिर पीछे हटना पहले दर्जे की बुजदिली है। वीर तो यह समझता है कि मनुष्य का जीवन जरा-सी चीज है। वह सिर्फ एक बार के लिए काफी है। बन्दूक में केवल एक गोली है। उसे एक बार ही प्रयोग किया जा सकता है। हाँ! कायर पुरुष इसको बड़ा ही कीमती और कभी न टूटने वाला हथियार समझते हैं। हर घड़ी आगे बढ़कर और यह दिखाकर कि हम बड़े हैं, वे फिर पीछे इसलिए हट जाते हैं कि उनका मनोबल (जीवन) किसी और अधिक बड़े काम के लिए बच जाय। गरजने वाले बादल ऐसे ही चले जाते हैं, परन्तु बरसने वाले बादल जरा-सी देर में मूसलाधार वर्षा कर जाते हैं।

वीर पुरुष का शरीर कुदरत की समस्त ताकतों का भंडार है। कुदरत का यह केन्द्र हिल नहीं सकता। सूर्य का चक्कर हिल जाये तो हिल जाये परन्तु वीर के दिल में जो दैवी केन्द्र है, वह अचल है। कुदरत की नीति चाहे विकसित होकर अपने बल को नष्ट करने की हो मगर वीरों की नीति, बल को हर तरह से इकट्ठा करने और बढ़ाने की होती है। वह वीर क्या, जो टीन के बर्तन की तरह झट से गर्म और ठंडा हो जाता है। सदियों नीचे आग जलती हो तो भी शायद गर्म हो और हजारों वर्ष बर्फ उस पर जमती रहे तो भी क्या मजाल जो उसकी वाणी तक ठंडी हो। उसे खुद गर्म और सर्द होने से क्या मतलब! सत्य की सदा जीत होती है। यह भी वीरता का एक चिह्न है। विजय वहीं होती है जहाँ पवित्रता और प्रेम है। दुनिया धर्म और अटल आध्यात्मिक नियमों पर खड़ी है। जो अपने आप को उन नियमों के साथ अभिन्न करके रहता है, उसी की विजय होती है।

जब हम कभी वीरों का हाल सुनते हैं तब हमारे अन्दर भी वीरता की लहरें उठती हैं और वीरता का रंग चढ़ जाता है परन्तु प्रायः वह चिरस्थायी नहीं होता। इसका कारण यही है कि हम सबको केवल दिखाने के लिए वीर बनना चाहते हैं। टीन के बर्तन का स्वभाव छोड़कर अपने जीवन के केन्द्र में निवास करो और सच्चाई की चट्टान पर दृढ़ता से खड़े हो जाओ। बाहर की सतह छोड़कर जीवन की तहों में घुसो तब नये रंग खिलेंगे।

-सरदार पूर्ण सिंह

3. अनेक स्थानों पर चित्र अस्पष्ट हैं।

पाठ ७

जूलिया

(प्रस्तुत एकांकी में एक भोली-भाली गवर्नेस (सेविका) की मार्मिक पीड़ा और विवशता का सजीव चित्रण है, वहीं दूसरी ओर शोषण से मुक्ति पाने का प्रभावी संदेश भी है।)

(बच्चों की गवर्नेस जूलिया वासिल्देवना आती है)

जूलिया- (दबे स्वर में) आपने मुझे बुलाया था मालिक?

गृहस्वामी- हाँ हाँ......बैठ जाओ जूलिया.....खड़ी मत रहो।

जूलिया- (बैठती हुई) शुक्रिया।

गृहस्वामी- हाँ तो जूलिया, मैं तुम्हारी तनख्वाह का हिसाब करना चाहता हूँ। मेरे ख्याल से तुम्हें पैसों की जरूरत होगी; और जितना मैं तुम्हें अब जान सका हूँ, मुझे लगता है कि तुम अपने आप पैसे कभी नहीं माँगोगी। इसलिए मैं खुद ही तुम्हें पैसे देना चाहता हूँ। हाँ तो तुम्हारी तनख्वाह तीस रूबल महीना तय हुई थी न?

जूलिया- (विनीत स्वर में) जी नहीं मालिक, चालीस रूबल।

गृहस्वामी- नहीं भाई, तीस ..... ये देखो डायरी (पन्ने पलटते हुए) मैंने इसमें नोट कर रखा है। मैं बच्चों की देखभाल और उन्हें पढ़ाने वाली हर गवर्नेस को तीस रूबल महीना ही देता हूँ। तुम से पहले जो गवर्नेस थी, उसे भी मैं तीस रूबल महीना ही देता था। अच्छा, तो तुम्हें हमारे यहाँ काम करते हुए दो महीने हुए हैं।

जूलिया- (दबे स्वर में) जी नहीं, दो महीने पाँच दिन।

गृहस्वामी- क्या कह रही हो जूलिया? ठीक दो महीने हुए हैं। भाई, मैंने डायरी में सब नोट कर रखा है। हाँ, तो दो महीने के बनते हैं- अंऽऽ......साठ रूबल। लेकिन साठ रूबल तभी बनतें हैं जब महीने में तुमने एक दिन भी छुट्टी न ली हो.... तुमने इतवार को छुट्टी मनायी है। उस दिन तुमने कोई काम नहीं किया। सिर्फ कोल्या को घुमाने के लिए ले गयी हो....और ये तो तुम भी मानोगी कि बच्चे को घुमाने ले जाना कोई काम नहीं होता.... इसके अलावा, तुमने तीन छुट्टियाँ और ली हैं। ठीक है न?

जूलिया- (दबे स्वर में) जी, आप कह रहे हैं तो.....ठीक..... (रुक जाती है)

गृहस्वामी- अरे भाई.... मैं क्या गलत कह रहा हूँ.....हाँ तो नौ इतवार और तीन छुट्टियाँ-यानी बारह दिन तुमने काम नहीं किया- यानी तुम्हारे बारह रूबल कट गए। उधर कोल्या

चार दिन बीमार रहा और तुमने सिर्फ वान्या को ही पढ़ाया। पिछले हफ्ते शा
तीन दिन दाँतों में दर्द रहा था और मेरी पत्नी ने तुम्हें दोपहर बाद छुट्टी दे
थी। तो बारह और सात-उन्नीस। उन्नीस नागे। हाँ तो भई, घटाओ साठ में से उन्नी
.....कितने रहते हैं...अम्....इकतालीस,....इकतालीस रूबल ! ठीक है?.....

जूलिया- (रुआँसी हो जाती है। रोते स्वर में) जी हाँ।

गृहस्वामी- (डायरी के पन्ने उलटते हुए) हाँ, याद आया... पहली जनवरी को तुमने चाय की प्लेट और प्याली तोड़ी थी। प्याली बहुत कीमती थी। मगर मेरे भाग्य में तो हमेशा नुकसान उठाना ही बदा है।.....मैंने जिसका भला करना चाहा, उसने मुझे नुकसान पहुँचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है..... खैर मेरा भाग्य !....हाँ,



तो मैं प्याली के दो रूबल ही काटूँगा... अब देखो उस दिन तुमने ध्यान नहीं दि
और तुम्हारी नजर बचाकर कोल्या पेड़ पर चढ़ गया और वहाँ किसी टहनी की खरो
लगने से उसकी जैकेट फट गयी। दस रूबल उसके गये। इसी तरह तुम्हारी लापरवा
की वजह से घर की सफाई करने वाली नौकरानी मारिया ने वान्या के नये जूते चु
लिये.... (रुक कर) तुम मेरी बात सुन भी रही हो या नहीं?

जूलिया- (मुश्किल से अपनी रुलाई रोकते हुए) जी सुन रही हूँ।

गृहस्वामी- हाँ ठीक है। अब देखो भाई, तुम्हारा काम बच्चों को पढ़ाना और उनकी देखभ
करना है। तुम्हें इसी के तो पैसे मिलते हैं। तुम अपने काम में ढील दोगी तो पै
कटेंगे या नहीं?..मैं ठीक कह रहा हूँ न ! ...... तो जूतों के पाँच रूबल और व
गये.... और हाँ, याद आया, दस जनवरी को मैंने तुम्हें दस रूबल दिये थे.....।

जूलिया- (लगभग रोते हुए) जी नहीं, आपने कुछ नहीं...(आगे नहीं कह पाती)

गृहस्वामी- अरे मैं क्या झूठ बोल रहा हूँ ? मैं डायरी में हर चीज नोट कर लेता हूँ। तुम्हें यकी
न हो तो दिखाऊँ डायरी? (डायरी के पन्ने यूँ ही उलटने लगता है)

जूलिया- (आँसू पोंछती हुई) आप कह रहे हैं तो आपने दिये ही होंगे।





हिन्दी विश्वशांति की भाषा है !

(प्रस्तुत पाठ 'हिन्दी प्रेमी साइजी माकिनो से रत्नावली कौशिक की बातचीत' पर आधारित है।)

जापान में ११ फरवरी सन् १९२४ ई० को जन्मे साइजी माकिनो ३६ वर्ष की उम्र बार भारत जो आये तो फिर यहीं के होकर रह गये। आये तो गाँधीजी के सेवाग्राम हिन्दुस्तानी तालीमी-संघ में पशुचिकित्सक के रूप में थे पर हिन्दुस्तान का ऐसा रंग चढ़ा लौटने का मन ही नहीं हुआ। खादी क्या अपनायी सम्पूर्ण चिन्तन ही गांधीमय हो चला मिलते हैं- महात्मा गांधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर के इस अनन्य भक्त और हिन्दी प्रेम माकिनो से -

प्रश्न- भारत आने के पीछे क्या विशेष उद्देश्य था?

उत्तर- सन् १९५८ ई० की बात है। मुझे फुजिई गुरु जी ने वर्धा स्थित सेवाग्राम में आमंत्रण दिया। वे सन् १९३१ ई० से गांधी जी के सहयोगी थे और सेवाग्राम में ही रहते एक पशुचिकित्सक की आवश्यकता थी। सोचा कुछ साल के लिए भारत चला जाता हूँ। वर्ष होने चले हैं, अब तो भारत ही मेरा घर है। बाद में फुजिई गुरु जी ने ही मुझे रवीन्द्रन के पास शान्तिनिकेतन भेजा। शान्तिनिकेतन में गुरुदेव के साथ रहकर जीवन का अर्थ की धारा बदल गयी।

प्रश्न- हिन्दी सीखने और पढ़ने का सिलसिला कैसे शुरू हुआ?

उत्तर-अप्रैल सन् १९५९ ई० में पंढरपुर सर्वोदय सम्मेलन के बाद विनोबा जी ने मुझसे मैं सेवाग्राम लौटकर हिन्दी सीखना प्रारम्भ करूँ और मैंने हिन्दी सीखना आरम्भ कर दिनों सेवाग्राम के प्रेसीडेन्ट आर्यनायकम् हुआ करते थे। उन्होंने आगरा के एक अच्छे हिन को मेरे पास भेजा। मुझ जैसे विदेशी के लिए हिन्दी सिखाना बहुत मुश्किल काम था। मु उच्चारण के लिए बहुत डाँट पड़ती थी। पर धीरे-धीरे मैंने हिन्दी बोलना और पढ़ना सी मेरी पत्नी 'युकिको' को जिसे सेवाग्राम में 'सुजाता' नाम दिया गया था, हिन्दी सीखने 'वर्धा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' में भेज दिया गया। छह महीने तक हॉस्टल में रहकर हि रही। शायद जापानियों में वही हिन्दी की सर्वप्रथम छात्रा रही हैं।

प्रश्न- सेवाग्राम में रहकर तो आप चरखा चलाना भी सीख गये होंगे ?

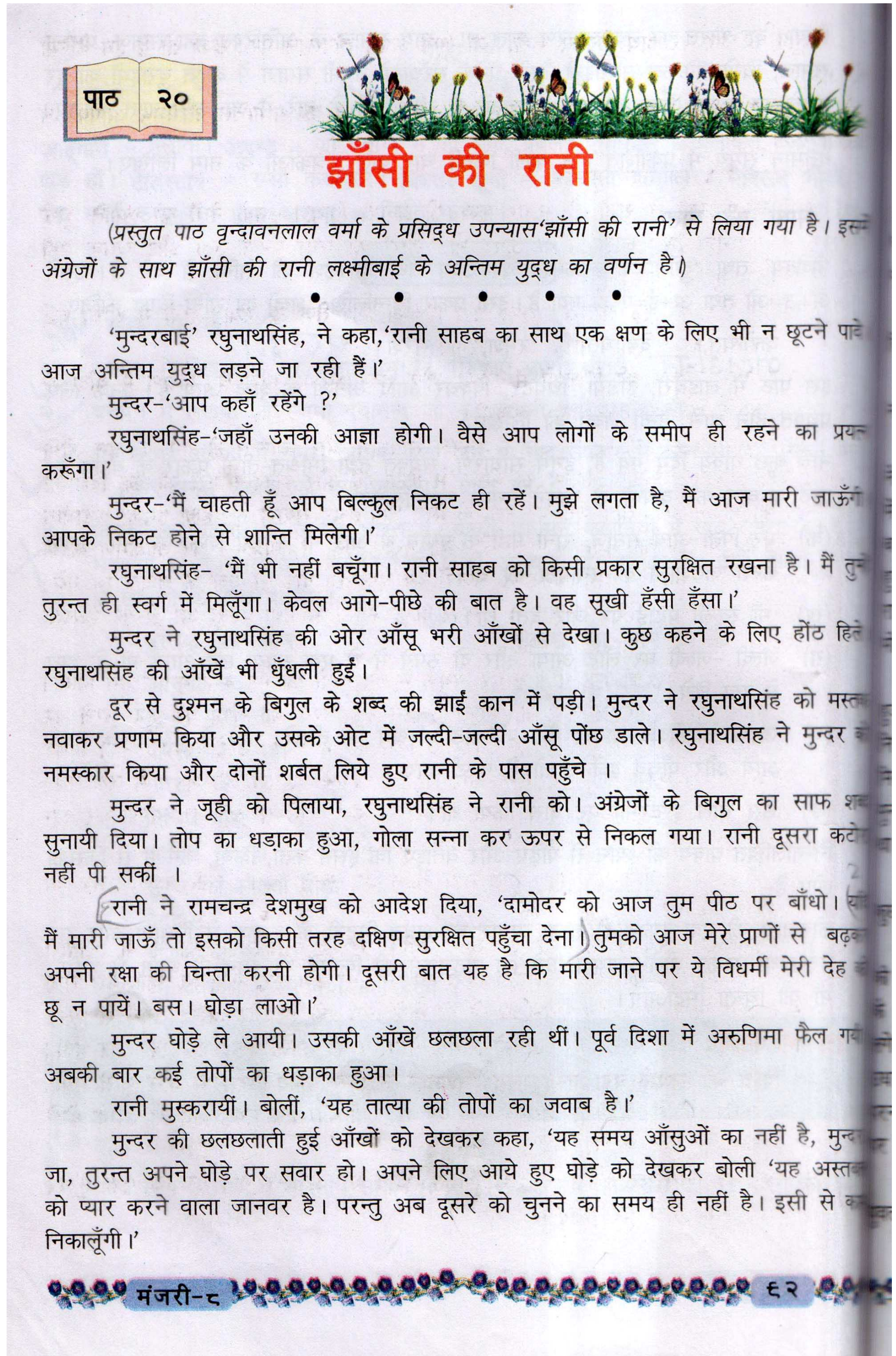
उत्तर- सेवाग्राम में गोशाला में इतना काम रहता था कि चरखे की तरफ ध्यान ही नहीं आज मैं चरखे के महत्त्व को समझ सकता हूँ बल्कि आज के युग में फिर से चरखे के प्र प्रशिक्षण की आवश्यकता महसूस करता हूँ।

प्रश्न- गुरुदेव टैगोर का साथ और शान्तिनिकेतन का वातावरण आपको कैसा

उत्तर- गुरुदेव के व्यक्तित्व और शान्तिनिकेतन के परिसर के प्राकृतिक सौन्दर्य ने आकर्षित किया कि मेरा कहीं जाने का मन ही नहीं करता था। हिन्दी-भवन के स



4. पाठ्यपुस्तकों में अनेक चित्र आकर्षक नहीं हैं।



पाठ २०

झाँसी की रानी

(प्रस्तुत पाठ वृन्दावनलाल वर्मा के प्रसिद्ध उपन्यास 'झाँसी की रानी' से लिया गया है। इस
अंग्रेजों के साथ झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के अन्तिम युद्ध का वर्णन है।)

• • • • •

'मुन्दरबाई' रघुनाथसिंह, ने कहा, 'रानी साहब का साथ एक क्षण के लिए भी न छूटने पाये आज अन्तिम युद्ध लड़ने जा रही हैं।'

मुन्दर-'आप कहाँ रहेंगे ?'

रघुनाथसिंह-'जहाँ उनकी आज्ञा होगी। वैसे आप लोगों के समीप ही रहने का प्रयत्न करूँगा।'

मुन्दर-'मैं चाहती हूँ आप बिल्कुल निकट ही रहें। मुझे लगता है, मैं आज मारी जाऊँगी आपके निकट होने से शान्ति मिलेगी।'

रघुनाथसिंह- 'मैं भी नहीं बचूँगा। रानी साहब को किसी प्रकार सुरक्षित रखना है। मैं तुरन्त ही स्वर्ग में मिलूँगा। केवल आगे-पीछे की बात है। वह सूखी हँसी हँसा।'

मुन्दर ने रघुनाथसिंह की ओर आँसू भरी आँखों से देखा। कुछ कहने के लिए होंठ हिले रघुनाथसिंह की आँखें भी धुँधली हुईं।

दूर से दुश्मन के बिगुल के शब्द की झाईं कान में पड़ी। मुन्दर ने रघुनाथसिंह को मस्तक नवाकर प्रणाम किया और उसके ओट में जल्दी-जल्दी आँसू पोंछ डाले। रघुनाथसिंह ने मुन्दर को नमस्कार किया और दोनों शर्बत लिये हुए रानी के पास पहुँचे ।

मुन्दर ने जूही को पिलाया, रघुनाथसिंह ने रानी को। अंग्रेजों के बिगुल का साफ शब्द सुनायी दिया। तोप का धड़ाका हुआ, गोला सन्ना कर ऊपर से निकल गया। रानी दूसरा कटोरा नहीं पी सकीं ।

रानी ने रामचन्द्र देशमुख को आदेश दिया, 'दामोदर को आज तुम पीठ पर बाँधो। यदि मैं मारी जाऊँ तो इसको किसी तरह दक्षिण सुरक्षित पहुँचा देना। तुमको आज मेरे प्राणों से बढ़कर अपनी रक्षा की चिन्ता करनी होगी। दूसरी बात यह है कि मारी जाने पर ये विधर्मी मेरी देह को छू न पायें। बस। घोड़ा लाओ।'

मुन्दर घोड़े ले आयी। उसकी आँखें छलछला रही थीं। पूर्व दिशा में अरुणिमा फैल गयी अबकी बार कई तोपों का धड़ाका हुआ।

रानी मुस्करायीं। बोलीं, 'यह तात्या की तोपों का जवाब है।'

मुन्दर की छलछलाती हुई आँखों को देखकर कहा, 'यह समय आँसुओं का नहीं है, मुन्दर जा, तुरन्त अपने घोड़े पर सवार हो। अपने लिए आये हुए घोड़े को देखकर बोली 'यह अस्तबल को प्यार करने वाला जानवर है। परन्तु अब दूसरे को चुनने का समय ही नहीं है। इसी से काम निकालूँगी।'

मंजरी-८ ६२

समाचार मिलते ही रानी ने इस तोपखाने का प्रबन्ध किया।



इतने में ही ब्रिगेडियर स्मिथ ने अपने छिपे हुए पैदलों को छिपे हुए स्थानों से निकाला। वे संगीनें सीधी किये रानी के पीछे वाली पैदल पल्टन पर दो पार्श्वों से झपटे। पेशवा की पैदल पल्टन घबरा गयी। उसके पैर उखड़े। भाग उठी। रानी ने प्रोत्साहन, उत्तेजन दिया। परन्तु उनके और उस भागती हुई पल्टन के बीच में गोरों की संगीनें और हुजरों के घोड़े आ चुके थे।

अंग्रेजों की कड़ाबीनें, संगीनें और तोपें पेशवाई सेना का संहार कर उठीं । पेशवा की दो तोपें भी उन लोगों ने छीन लीं। अंग्रेजी सेना बाढ़ पर आयी हुई नदी की तरह बढ़ने और फैलने लगी।

रानी की रक्षा के लिए लालकुर्ती सवार अटूट शौर्य और अपार विक्रम दिखलाने लगे। न कड़ाबीन की परवाह, न संगीन का भय और तलवार तो मानो उनको ईश्वरीय देन थी। उस तेजस्वी दल ने घंटों अंग्रेजों का प्रचंड सामना किया। रानी धीरे-धीरे पश्चिम दक्षिण की ओर अपने मोर्चे की शेष सेना से मिलने के लिए मुड़ी। यह मिलान लगभग असम्भव था, क्योंकि उस भागती हुई पैदल पल्टन और रानी के बीच में बहुसंख्यक हुजर सवार और संगी-बरदार पैदल थे। परन्तु उन बचे-खुचे लालकुर्ती वीरों ने अपनी तलवारों की आड़ बनायी।

रानी ने घोड़े की लगाम अपने दाँतों में थामी और दोनों हाथों से तलवार चलाकर अप- मार्ग बनाना आरम्भ कर दिया । दक्षिण-पश्चिम की ओर सोनरेखा नाला था। आगे चलकर ब- गंगादास की कुटी के पीछे दक्षिण और पश्चिम की ओर हटती हुई पेशवाई पैदल पल्टन।

मुन्दर रानी के साथ थी। अगल-बगल रघुनाथसिंह और रामचन्द्र देशमुख। पीछे कुं- गुलमुहम्मद और केवल बीस-पच्चीस अवशिष्ट लाल सवार। अंग्रेजों ने थोड़ी देर में इन सबके चा- तरफ घेरा डाल दिया। सिमट-सिमट कर उस घेरे को कम करते जा रहे थे।

परन्तु रानी की दुहत्थू तलवारें आगे का मार्ग साफ करती चली जा रही थीं। पीछे के - सवारों की संख्या घटते-घटते नगण्य हो गयी। उसी समय तात्या ने रुहेली और अवधी सैनिकों - सहायता से अंग्रेजों के व्यूह पर प्रहार किया। तात्या कठिन से कठिन व्यूह में होकर बच निक- की रणविद्या का पारंगत पंडित था। अंग्रेज थोड़े से सवारों को लालकुर्ती का पीछा करने के - छोड़कर तात्या की ओर मुड़ गये। सूर्यास्त होने में कुछ विलम्ब था।

लालकुर्ती का अन्तिम सवार मारा गया। रानी के साथ केवल चार सरदार और उ- तलवारें रह गयीं। पीछे से कड़ाबीन और तलवार वाले दस-पन्द्रह गोरे सवार। आगे कुछ सं- वाले गोरे पैदल।

5. प्रश्न अभ्यास में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की न्यूवता है।



पेड़ों के झुनझुने = पेड़ों के पत्ते जो हवा के झोंके से आवाज करते हैं। जरतारी =जरी के क... वाली।

प्रश्न-अभ्यास





कविता से

१. कवि ने कविता में प्रकृति की उपमा बिटिया के किन-किन खिलौनों से दी है ?

२. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) लुढ़कती आ रही है, सूरज की लाल गेंद।

(ख) गुड्डे की जरतारी टोपी उल्टी नीचे पड़ी है।



विचार और कल्पना

१. तारों को 'गैस के गुब्बारे' क्यों कहा गया है ?

२. कवि ने सूरज को लाल गेंद कहा है, बताइए कि चन्द्रमा, तारे, ओसकण और वर्षा की बूँ... को आप क्या कह सकते हैं।

३. जब आसमान साफ होता है और अँधेरी रात होती है तो आसमान में एक सफेद पट्टी दिख... देती है, इसे आकाशगंगा कहते हैं। आप अनुमान लगाइए कि एक आकाशगंगा में कितने तारे हों...

४. प्रस्तुत कविता केवल एक बेटी के जागने तक ही सीमित न होकर सम्पूर्ण नारी जागरण ... भी व्यक्त करती है। कवि का संकेत है कि अब नारी जागरण का समय आ गया है। ... अब गुड्डा-गुड्डी से ही बँधकर नहीं रहना है। नया सवेरा उसके लिए नया क्षितिज खो... रहा है। पूरी कविता की एक दूसरी ही व्याख्या आपके सामने होगी- इसे समझकर लिखि...

५. गुब्बारे में जब गैस भरी जाती है तब वह ऊपर क्यों उड़ता है ?



कुछ करने को

१. प्रातः काल का सुन्दर-सा एक दृश्य बनाकर रंग भरिए तथा उसे अपनी कक्षा में टाँगिए।

२. इस कविता में तुकान्त शब्द नहीं है, फिर भी इसकी सरसता बनी हुई है। आप भी एक अतुकान्त कविता बनाकर कक्षा में सुनाइए।

6. पाठ्य पुस्तक में सन्दर्भ का अभाव है।

7. पाठ्यपुस्तक में पुरूष लेखकों की अपेक्षा महिला लेखकों का अभाव है।

8. पाठ्य पुस्तक में नवीनतम/आधुनिक सामग्री का अभाव है।

साइजी माकिनो ने शांतिनिकेतन की क्या विशेषताएँ बतायी हैं ?
साइजी माकिनो को ग्वालियर की बिड़ला फैक्ट्री में क्यों जाना पड़ा ?
साइजी की क्या कामना है ?
जापान में हिन्दी की क्या स्थिति है ?
साइजी ने पाठकों को कौन-सा संदेश देना चाहा है ?
हिन्दी भाषा के क्षेत्र में कुछ जापानी लेखकों ने कार्य किये हैं। स्तम्भ 'क' में कार्य एवं स्तम्भ 'ख' में उनके नाम लिखे गये हैं उनका सही-सही मिलान कीजिए-

'क' कार्य	**'ख' नाम**
भीष्म साहनी के 'तमस' का हिन्दी अनुवाद	प्रो० मिजोकामी
'जापानी-हिन्दी कोश' व 'गांधी जी की आत्मकथा' का अनुवाद	साइजी माकिनो
हिन्दी नाटक लेखन और मंचन	प्रो० दोइ
हिन्दी साहित्य का काम	प्रो० ताषियोतनाका
टोकियो विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग की स्थापना	प्रो० कोगा
चित्रलेखा का जापानी अनुवाद	प्रो० साकाता

विचार और कल्पना

यदि पेड़-पौधे और जीव-जन्तु भी भाषा बोलने में सक्षम होते तो इसका वातावरण पर क्या प्रभाव पड़ता?
हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है किन्तु देश के अनेक प्रदेशों में इसके अतिरिक्त प्रादेशिक भाषाएँ भी बोली जाती हैं। नीचे लिखी गयी भाषाओं के उनके प्रदेशों से मिलान कीजिए-

मराठी	आन्ध्रप्रदेश
मलयालम	तमिलनाडु
कन्नड़	केरल
तेलगू	महाराष्ट्र
तमिल	कर्नाटक

कुछ करने को

साक्षात्कार, हिन्दी गद्य की एक लघु विधा है। इसमें किसी क्षेत्र में विशेष उपलब्धि पाये हुए व्यक्ति से बातचीत करके उसके सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी पाठक या श्रोता को दी जाती हैं। आप अपने क्षेत्र के किसी प्रसिद्ध व्यक्ति का साक्षात्कार लें और उसे कक्षा में प्रस्तुत करें।
'१४ सितम्बर' प्रतिवर्ष 'हिन्दी-दिवस' के रूप में मनाया जाता है। पता लगाइए कि हिन्दी-दिवस १४ सितम्बर को ही क्यों मनाया जाता है।

9. पाठ्य पुस्तक में वेब लिंक एवं क्रियात्मक सी.डी. का अभाव है।

10. पाठ्य सामग्री अनाकर्षक (श्वेत श्याम मात्र) है।

6.2 हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों में सुधार हेतु सुझाव :

शोधकार्य की दृष्टि से इस विषय का पर्याप्त महत्व है क्योंकि शोधकार्य में शोधार्थी ने नवीन तथ्यों को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है तथा सिर्फ उ.प्र. बोर्ड की पाठ्य पुस्तक का ही अध्ययन किया है। जिससे समावेशन हेतु निम्न सुझाव दिए गये हैं।

1. पाठ्य पुस्तक वाह्य एवं आंतरिक रूप से सुन्दर होनी चाहिए।
2. पाठ्य पुस्तक सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप हो।
3. हिन्दी के मूर्धन्य विद्वानों के पाठों को पुस्तक में स्थान देना चाहिए एवं महिला लेखकों का भी पाठ्यपुस्तक में बराबरी का प्रतिनिधित्व होना चाहिए।
4. पाठ्य पुस्तक में प्रकरण के अनुसार रंगीन, आकर्षक चित्रों का प्रयोग किया जाना चाहिये।
5. प्रश्न अभ्यास में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की संख्या बढ़ायी जानी चाहिए क्योंकि वर्तमान युग में प्रतियोगी परीक्षाओं प्रायः वस्तुनिष्ठ प्रश्न आधारित होती है।
6. पाठ्य पुस्तक में नवीनतम/आधुनिकतम सामग्री का प्रयोग होना चाहिये।
7. पाठ्य पुस्तक में अध्यायों/पाठों से सम्बन्धित गहन अध्ययन हेतु वेबलिंक दिये जाने चाहिए।
8. प्रत्येक पाठ्य पुस्तक के साथ क्रियात्मक सी.डी. दी जानी चाहिये जिसमें पाठ से सम्बन्धित रूचिकर अभ्यास मालायें, खेल वीडियो आदि का संग्रह हो।

सप्तम् अध्याय

7.1 प्रस्तावना :

किसी भी शोध का उदभव आवश्यकता एवं समस्या से होता है जिसकी पूर्ति के लिए शोधकर्ता वांछनीय उद्देश्यों का निर्धारण कर शोध अध्ययन कार्य का प्रारम्भ कतरा है तथा उनके परिणाम के रू॰ में अपने उद्देश्यों को वास्तविक रूप प्रदान करता है। अतः सम्पूर्ण शोधकार्य की शोध प्रक्रिया में प्रदत्तों के एकत्रीकरण, उचित व स्पष्ट प्रस्तुतीकरण विश्लेषण तथा व्याख्या के पश्चात् यह आवश्यक हो जाता है कि अध्ययन की उपलब्धियों के आधार पर शोधकार्य का निष्कर्ष निकाला जाए।

प्रस्तुत लघु शोध में विभिन्न उद्देश्यों के आधार पर अध्ययन किया गया है व निम्न निष्कर्ष ज्ञात हुए।

उद्देश्य 1.

हिन्दी की पाठ्यपुस्तक का आलोचनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष :

शोधार्थी ने प्रस्तुत लघुशोध में कक्षा 8 की हिन्दी की पाठ्य पुस्तक 'मंजरी' का आलोचनात्मक अध्ययन किया तथा निम्न कमियों को पाया हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में चित्रों, सन्दर्भ, नवीनतम सामग्री, वेबलिंक एवं क्रियात्मक सी.डी. आदि का अभाव पाया गया। पाठ्य पुस्तक में अनेक स्थानों पर चित्र अस्पष्ट / अनाकर्षक पाये गये।

इसके अतिरिक्त प्रश्न अभ्यास में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की न्यूवता एवं पाठ्य सामग्री श्वेत श्याम पायी गयी।

उद्देश्य 2.

हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

निष्कर्ष :

शोधार्थी द्वारा पाठ्य पुस्तक में आने वाली कमियों का अध्ययन कर उन्हें दूर करने हेतु निम्न सुझाव प्रस्तुत किये गये।

पाठ्य पुस्तक बाह्य एवं आंतरिक रूप से सुन्दर, सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप महिला लेखकों के अधिक प्रतिनिधित्व रंगीन आकर्षक चित्र युक्त अधिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न युक्त सन्दर्भ सहित एवं आधुनिक सामग्री (वेबलिंक, क्रियात्मक सी.डी.) से युक्त होनी चाहिए।

उद्देश्य 3. हिन्दी शिक्षण से सम्बन्धित नवीनतम सामग्री का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :

शोधार्थी ने हिन्दी शिक्षण से सम्बन्धित नवीनतम सामग्री के अन्तर्गत, ई–बुक्स, वेबसाइट, ब्लॉग, वीडियो चैनल का अध्ययन किया तथा यह पाया कि इंटरनेट पर हिन्दी से सम्बन्धित नवीनतम सामग्री उपलब्ध है जिसका लाभ उठाया जा सकता है किन्तु अंग्रेजी की तुलना में हिन्दी भाषा सम्बन्धी इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री नगण्य मात्र है आजादी के इतने वर्षों बाद भी हिन्दी को उसका उचित स्थान नहीं मिल सका है उसके साथ दोयम दरजे का व्यवहार हो रहा है अधिकांश लेख/सामग्री/जानकारी अंग्रेजी में ही उपलब्ध है। हिन्दी में कुछ भी खोजने पर प्रायः गिनीचुनी सामग्री मिलती है जो प्रायः किसी काम की नहीं होती।

उद्देश्य 4. हिन्दी के विभिन्न सॉफ्टवेयरों का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :

कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग भाषा द्वारा लिखे गये निर्देशों की श्रृंखला के अनुसार दिए गये डेटा का प्रोसेस होता है, बिना सॉफ्टवेयर के कम्प्यूटर का कोई भी कार्य नहीं कर सकते हैं।

शोधार्थी ने शोध से सम्बन्धित निम्नलिखित सॉफ्टवेयरों का अध्ययन किया।

वर्तनी जाँचक स्पैल चेकर ऐसा कम्प्यूटर प्रोग्राम है जो स्वयं या किसी अन्य प्रोग्राम

से जुड़कर किसी भाषा में लिखे पाठ के शब्दों की वर्तनी की जांच करता है शोधार्थी ने यह पाया कि अंग्रेजी शब्द चेकर की अपेक्षा हिन्दी शब्द चैकर कम प्रभावी है। अतः शोधार्थी ने यह पाया कि आंग्ल भाषा की अपेक्षा हिन्दी सॉफ्टवेयरों की संख्या नगण्य मात्र है।

i- प्रस्तुत लघुशोध में हिन्दी शिक्षण के आधुनिक आयामों जैसे– ई–बुक्स, वेबसाइट, ब्लॉग, चैनल तथा सोशल मीडिया का अध्ययन कर नवीन एवं आधुनिक सामग्रियों का संग्रह किया तथा यह पाया कि आधुनिक आयामों के अन्तर्गत प्रचुर मात्रा में हिन्दी सम्बन्धी विभिन्न सामग्री उपलब्ध है। किन्तु भाषा में उपलब्ध सामग्री की तुलना में यह उपलब्धता नगण्य है।

ii- प्रस्तुत लघुशोध में हिन्दी के विभिन्न सॉफ्टवेयरों का अध्ययन किया गया और पाया गया कि हिन्दी से सम्बन्धित कुछ एक गिनती के सॉफ्टवेयर हिन्दी वर्तनी जॉचक, प्रवाचक हिन्दी शब्दकोश, हिन्दी अनुवादक आदि उपलब्ध किन्तु उनके अत्यन्त ही सीमित प्रयोग तथा आंग्ल भाषा में उपलब्ध सॉफ्टवेयरों की तुलना में हिन्दी सॉफ्टवेयरों की उपलब्धता नगण्य है।

iii- हिन्दी के पाठ्यक्रम में सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत किये गये जैसे– पाठ्यपुस्तक, बाह्य एवं आन्तरिक रूप से सुन्दर व स्पष्ट हो, सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप हो, हिन्दी के मूर्धन्य विद्वानों के पाठों से युक्त हों, महिला लेखकों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व हो, पाठ के अनुसार रंगीन व आकर्षक चित्रों से युक्त हों, वस्तुनिष्ट प्रश्नों की संख्या अधिक हो, गहन अध्ययन हेतु सन्दर्भ आधुनिक साम्रगी, वेबलिंक क्रियात्मक सीडी से युक्त हो।

शैक्षिक उपादेयता :

कोई भी शैक्षिक अनुसन्धान इसलिए किया जाता है कि शिक्षा के क्षेत्र में उत्पन्न होने वाली विभिन्न समस्याओं को पहचान कर उसका निदान किया जा सके और उन समस्याओं का समाधान ढूंढ़ने का प्रयास किया जा सके। ऐसे अनुसंधान तभी सार्थक हो सकते हैं जब

उसका कोई शैक्षिक महत्व हो तथा उसका लाभ छात्र वर्ग को प्राप्त हो सके।

प्रस्तुत लघुशोध 'हिन्दी शिक्षण में आधुनिक तकनीकी एवं चुनौतियां' के शैक्षिक महत्व का लाभ छात्र/छात्राएं एवं सभी वर्ग समाज को एक गति प्रदान करेगा।

प्रस्तुत लघुशोध के अध्याय 4 में हिन्दी शिक्षण के आधुनिक आयामों का वर्णन प्रस्तुत है एवं अध्याय 5 में हिन्दी की पाठ्य पुस्तक का आलोचनात्मक अध्ययन एवं सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत हैं।

शिक्षा मानव के लिए अत्यन्त आवश्यक तत्व बन गयी है भारत में ही नहीं अपितु विश्व के प्रत्येक देश का मुख्य लक्ष्य अपने देश के निवासियों को सार्वलौकिक शिक्षा प्रदान करना है। नवीन आधुनिक परिवर्तनों से आज ऐसी शैक्षिक समस्याएं उत्पन्न एवं वैज्ञानिक तरीकों से होना अत्यावश्यक है। भारत में शिक्षा की आवश्यकता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि प्राचीन शैक्षिक समस्याओं में समन्वय का प्रश्न शिक्षा शास्त्रियों के लिए चुनौती बन गया है।

आज हिन्दी विषय की भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी अति आवश्यकता है हमें आधुनिकीकरण के लिए विभिन्न वैज्ञानिक उपकरणों की आवश्यकता है। जिसमें एक कम्प्यूटर भी है कम्प्यूटर से वैज्ञानिक प्रगति शीघ्रतापूर्वक सम्भव है। कम्प्यूटर के लिए भाषा का चयन में संस्कृत का सर्वप्रथम नाम है जिसका ज्ञान बिना हिन्दी के सम्भव नहीं है, अतः हमें आधुनिकीकरण के लिए भी हिन्दी की आवश्यकता है।

केवल हिन्दी ही एक ऐसा विषय है जिसके माध्यम से एक नये युग का निर्माण देश में किया जा सकता है। यह युग जहां सुख शांति का साम्राज्य होगा वह युग जहां प्राणी विश्व बन्धुत्व के गीत गायेगें वह युग जहां ईर्ष्या लोभ मोह आदि आसुरी शक्तियों के लिए कहीं कोई स्थान न होगा।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

चतुर्वेदी डॉ. शिखा	–	हिन्दी शिक्षण, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ (2011)
प्रसाद केशव	–	हिन्दी शिक्षण, धनपत राय पब्लिशिंग कम्पनी (प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली–11002
राय, पारसनाथ	–	अनुसन्धान परिचय, लक्ष्मीनरायण अग्रवाल पब्लिशर्स, आगरा (2008)
श्रीवास्तव, डी.एस.	–	अनुसंधान विधियां, साहित्य प्रकाशन, आगरा (2006)
पाण्डेय डॉ. रामशकल	–	हिन्दी शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा (2011)
चौहान, रीता	–	हिन्दी शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा (2016117)
शर्मा वी.एन.	–	हिन्दी शिक्षण साहित्य प्रकाशन, आगरा (2009)
गुप्ता एस.पी.	–	अनुसन्धान संदर्शिका, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद (2011)
शर्मा आर. ए.	–	शिक्षा अनुसंधान , सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ (2005)
सिंह अरूण कुमार	–	मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ (26 जून 2015)
सुमन, अम्मा प्रसाद	–	हिन्दी भाषा अतीत एवं वर्तमान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
सिंघल, महेश चन्द्र तथा अन्य	–	हिन्दी शिक्षण शिवलाल एण्ड कम्पनी, आगरा
तिवारी, भोलानाथ	–	हिन्दी भाषा, किताब महल, इलाहाबाद
तिवारी, पुरूषोत्तम लाल	–	हिन्दी शिक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

Webliography

1. http://googleweblight.com/i?u=http://khsindia.org/india/hi/
2. http://gooleweblight.com/i?
3. https://hi.m.wikipedia.org
4. http://khsindia.org/india
5. http://khsindia.org/india/hi
6. http://gooleweblight.com
7. http://hindinideshalaya.nic.in/hindi/index.html
8. http://hi.m.wikipedia.org
9. http://www.mgahv.in/onlineadmission
10. https://hi.m.wikipedia.org
11. http://gooleweblight.com/i?u=http://khsindia.org/india
12. http://dir.hinkhoj.com
13. http://m.hindi.webdunia.com/hindi-computing/worlds-first-search-engine
14. http://gooleweblight.com/i?u=www.raftaar.in
15. https://gooleweblight.com/i?u=https://hi.m.wikipedia.org/wiki
16. http://hindi.webdunia.com/hindi-computing/spell-checker115090900019_1.html
17. https://gooleweblight.com
18. https://gooleweblight.com/i?u=http://hi.m.wiktionary.org/wiki
19. http://gooleweblight.com
20. https://hi.m.wikipedia.org/wiki/anuvadak

परिशिष्ट : अ

लिखना तथा प्रपत्र भरना। पठित अथवा सुनी गयी सामग्री का सारांश लिखना। लेखन में उपयुक्त शब्दों, मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग करना। शब्द एवं वाक्य रचना में शुद्ध वर्तनी का प्रयोग करना। वाक्यों तथा अनुच्छेदों में विराम चिह्नों का यथास्थान उचित प्रयोग करना। स्वतंत्र रूप से गद्य अथवा पद्य में विभिन्न विषयों पर लिखित रूप में अपने विचारों को व्यक्त करना।

५. **व्याकरण** — हिन्दी वर्ण विचार, शब्द विचार (शब्द स्रोत–तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी शब्द)। **सन्धि**–सन्धि के भेद, स्वर तथा व्यंजन सन्धियाँ। **समास**–समास के भेद, विग्रह। उपसर्ग, प्रत्यय, समानार्थी, विपरीतार्थी, पर्यायवाची शब्द, शब्द–युग्म। **पद भेद**–संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया एवं अव्यय के भेद। **वाक्य रचना**–वाक्य, वाक्य के भेद (सरल, संयुक्त एवं मिश्रित वाक्य), वाक्यांष के लिए एक शब्द। मुहावरे लोकोक्तियाँ। **विराम चिह्न**–प्रमुख विराम चिह्नों की पहचान एवं प्रयोग। **अलंकार**–अनुप्रास, यमक, लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति।

६. **अनिवार्य संस्कृत** — संस्कृत के गद्य एवं पद्य को समझते हुए सुनना। श्लोकों, सुभाशित वाक्यों तथा सूक्तियों को सन्दर्भ के अनुसार बोलना। संस्कृत के अंशों का हिन्दी में अर्थ बताना। मित्रों के साथ संस्कृत में बातचीत करना। संस्कृत में छोटी–छोटी कहानियाँ सुनना। संस्कृत गद्य, पद्य अंशों को शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण के साथ अर्थ ग्रहण करते हुए पढ़ना। पुस्तक में दी गयी सामग्री के अतिरिक्त संस्कृत की अन्य कहानियों, कविताओं को पढ़ना। संस्कृत के पढ़े गये गद्य–पद्य अंशों का अर्थ लिखना। हिन्दी के सरल वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करना। शब्द रूप एवं धातु रूप को शुद्ध रूप में लिखना।

शब्दरूप – मुनि, सरित् तथा धेनु शब्दों के रूप सभी विभक्तियों में।

धातुरूप – दृश्, स्था, पा (पिब्), नी तथा कृ धातु के रूप सभी लकारों में।

पाठ्यक्रम का मासिक विभाजन
हिन्दी कक्षा–8

माह	पाठ का नाम
अप्रैल	1. वीणा वादिनि वर दे
	2. काकी
	3. वन्दना
मई	4. सच्ची वीरता
	5. बिटिया के लिए
	6. भोजनस्य राज्य प्राप्तिः
जून	**ग्रीष्मावकाश**
जुलाई	7. अपराजिता
	8. नीति और भक्ति के दोहे
	9. बाल–प्रतिज्ञा
	10. तमसो मा ज्योतिर्गमय
अगस्त	11.जूलिया
	12.धानों का गीत
	13. हिन्दी विश्वशान्ति की भाषा है
	प्रथम सत्र परीक्षा
सितम्बर	14. बाल–छवि, विनय के पद, सीता स्वयंवर
	15. आत्मनिर्भरता
	16. विभक्तिनां प्रयोगाः
	17. सहसा विद्धीत न क्रियाम्
अक्टूबर	18. पहरूए सावधान रहना
	19. दुःख का अधिकार(अप्रैल से अक्टूबर तक पढ़े गये पाठों का अभ्यास)
	अर्द्धवार्षिक परीक्षा
नवम्बर	20. चुप–चाप
	21. एक स्त्री का पत्र
	22. सोना
	23.प्रभात सौन्दर्यम्
दिसम्बर	24. अमरकंटक से डिंडौरी
	25. नीड़ का निर्माण फिर–फिर
	26. आदर्श परिवारः
	द्वितीय सत्र परीक्षा
जनवरी	27. जब मैंने पहली पुस्तक खरीदी
	28. झाँसी की रानी
	29. कुम्भ मेला
	30. व्यवसायेषु संस्कृतम् एवं व्याकरणम्
फरवरी	31. बैताल की कथा
	32. लीक वही नहीं (पुनरावृत्ति/सम्पूर्ण पाठों का अभ्यास)
मार्च	**वार्षिक परीक्षा**

परिशिष्ट : ब





परिशिष्ट : स


अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल
(राज्य विश्वविद्यालय - मध्यप्रदेश अधिनियम क्रमांक ३४, वर्ष - २०११ द्वारा संचालित)
अटल बिहारी हिंदी विश्वविद्यालय
प्रथम विश्व योग दिवस

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान दिल्ली



केन्द्रीय हिन्दी संस्थान अहमदाबाद



मन की भाषा, प्रेम की भाषा

हिंदी है भारत जन की भाषा

हिंदी

हिन्दी

ISBN 978-93-5473-080-1

